संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ सितम्बर २०१५
वर्ष : २५ अंक : ३
(निरंतर अंक : २७३)
पृष्ठ संख्या : ३२+४
(आवरण पृष्ठ सहित)

न कोई पुख्ता सबूत और न ही कोई मेडिकल आधार, फिर भी

निर्दोष बापूजी को क्यों रखा गया है २ साल से जेल में ?

बापूजी के बाहर आने के दिन आते हैं तो अखबारों-पत्रिकाओं, चैनलों आदि के द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर कुछ-न-कुछ दुष्प्रचार का माहौल बनाते हैं धर्मांतरणवाले ।

सूझबूझ के धनी पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी का वक्तव्य - पढ़ें पृष्ठ २७

पूज्य बापूजी के साथ...

प्रसिद्ध योगाचार्य श्री रामदेव बाबा

प्रसिद्ध कथाकार श्री मोरारी बापू

श्री सत्य साँई बाबा

श्री श्री रविशंकरजी

देश के प्रधानमंत्रियों के उद्‌गार

''पूज्य बापूजी सारे देश में भ्रमण करके जागरण का शंखनाद कर रहे हैं, संस्कार दे रहे हैं । हमारी जो प्राचीन धरोहर थी, उसको हमारी आँखों में ज्ञान का अंजन लगाकर फिर से हमारे सामने रख रहे हैं । बापूजी का प्रवचन सुनकर बड़ा बल मिला है।''

- भारतरत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधानमंत्री

''पूज्य बापूजी ! मानव-कल्याण के इस तपश्चर्या-यज्ञ में जो संस्कार की दिव्य ज्योति प्रकट हुई है, उसके प्रकाश में मैं और जनता - सब चलते रहें।''

- श्री नरेन्द्र मोदी, वर्तमान प्रधानमंत्री, तत्कालीन मुख्यमंत्री, गुजरात

''कलह, विग्रह और द्वेष से ग्रस्त वर्तमान वातावरण में बापू जिस तरह सत्य, करुणा और संवेदनशीलता के संदेश का प्रसार कर रहे हैं, उसके लिए राष्ट्र उनका ऋणी है।''

- श्री चन्द्रशेखर, तत्कालीन प्रधानमंत्री

''पूज्य बापूजी के दिव्य दर्शन एवं अनुभवसम्पन्न वाणी का मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा है। उनकी निगाहों से तन प्रभावित होता है और वचनों से मन भी पवित्रता का मार्ग पकड़ लेता है।''

- श्री गुलजारीलाल नंदा, तत्कालीन प्रधानमंत्री

श्री एच.डी.देवेगौड़ा

''मैंने गृहमंत्री राजनाथजी से कहा कि आशारामजी बापू के खिलाफ किया गया केस फर्जी है। उनके खिलाफ मुकदमा चलाने में जनता के पैसों का दुरुपयोग होता है । यह बिगाड़ नहीं किया जाना चाहिए।''

- सुप्रसिद्ध न्यायविद् डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी

''यह न्याय-सिद्धांत है कि चाहे हजार दोषी छूट जायें पर एक निर्दोष को सजा नहीं होनी चाहिए।''

- न्यायमूर्ति सुनील अम्बवानी, मुख्य न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय

१३ अखाड़ों के प्रमुख साधुओं व विभिन्न धर्मों के आचार्यों ने सर्वसम्मति से पूज्य संत श्री आशारामजी बापू को धर्म रक्षा मंच के अध्यक्ष के रूप में चुना एवं उनके प्रति अपनी आत्मीयता, अहोभाव व्यक्त किये।

''षड्यंत्र के तहत ही हिन्दू आस्था, हिन्दू संतों पर कुठाराघात किया जा रहा है। संत आशारामजी बापू के मामले में जल्द ही दूध-का-दूध और पानी-का-पानी हो जायेगा।''

- जगद्गुरु शंकराचार्य श्री निश्चलानंद सरस्वतीजी, जगन्नाथपुरी मठ

''अगर बापू जैसे संतों को जेल में डालकर बदनाम करने का षड्यंत्र होता रहा तो भारत की अस्मिता, संस्कृति सुरक्षित नहीं रह पायेगी।''

- सुमेरु पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी नरेन्द्रानंद सरस्वतीजी

''शंकराचार्यजी की गिरफ्तारी हो या आशारामजी बापू की, नारायण साँई की हो या और संतों की, यह एक षड्यंत्र है।''

- जगद्गुरु श्री पंचानंद गिरिजी, जूना अखाड़ा
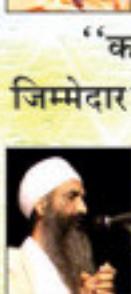
''कल हमारे बापू निर्दोष बरी हो के आयेंगे तो इस बीच उनको जो प्रताड़ित किया गया, उसका जिम्मेदार कौन होगा ? भक्तों को और देश को जो नुकसान हुआ उसकी भरपाई कैसे हो सकती है ?''

- श्री श्री १०८ श्री नरेन्द्र गिरि महाराज, अध्यक्ष, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद

''पूज्य बापूजी सभीका हर तरह से भला ही सोचते हैं। यह बात सभी जानते हैं कि बापूजी के खिलाफ षड्यंत्र हो रहे हैं।''

- संत बाबा हरपाल सिंहजी, प्रमुख, रतवाड़ा साहिब गुरुद्वारा

''बापूजी के विरुद्ध षड्यंत्र है। समय आ गया है कि सनातन हिन्दू परम्परा से जुड़ी सभी संस्थाएँ, संगठन और साधु-महात्मा एकजुट हों और सुनियोजित ढंग से दुष्प्रचार की काट करें।''

- आचार्य बालकृष्ण, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार

''अखिल भारतीय संत समिति के ११ लाख संत बापूजी के साथ हैं !''

- महामंडलेश्वर श्री देवेन्द्रानंद गिरिजी, राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारतीय संत समिति

''वर्तमान युग में सनातन धर्म की परम्परा को, सनातन धर्म की ध्वजा को जिन्होंने अपने कंधे पर उठा के चलने का संकल्प लिया है, वे हैं परम श्रद्धेय संत श्री आशारामजी बापू।''

- महामंडलेश्वर श्री स्वामी विश्वेश्वरानंद गिरिजी महाराज, महानिर्वाणी अखाड़ा

''पूज्य संत श्री आशारामजी पर अभियोग लगाकर उनको प्रताड़ित किया जा रहा है। यह प्रत्येक भारतीय के लिए हानिकारक है। लोगों को इसके लिए कमर कसकर तैयार रहना चाहिए और संस्कृति की रक्षा में जुट जाना चाहिए।''

- जगद्गुरु शंकराचार्य श्री माधवाश्रमजी महाराज

''संत आशारामजी ने जो अध्यात्म का प्रचार-प्रसार किया है उसकी जितनी सराहना करो कम है। बापूजी ने पिछड़े क्षेत्रों में जाकर उत्थान का कार्य किया है, गुरुकुल चलाये हैं। अफवाहों में उन्हें फँसाकर बदनाम किया जा रहा है। किसी भी प्रकरण में बापूजी दोषी नहीं हैं।''

- बालयोगी अर्जुनपुरीजी महाराज, जूना अखाड़ा के वरिष्ठ महामंडलेश्वर

''आज बापूजी जैसे संत का अपमान हो रहा है। संत तो क्षमाशील हैं पर प्रजा के लिए यह एक अशोभनीय बात है।''

- श्री त्र्यंबक भारतीजी महाराज, सचिव, निरंजनी पंचायती अखाड़ा

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २५ अंक : ३ मूल्य : ₹ ६

भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २७३)

प्रकाशन दिनांक : १ सितम्बर २०१५

पृष्ठ संख्या : ३२+४ (आवरण पृष्ठ सहित)

भाद्रपद-आश्विन वि.सं. २०७२

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम

प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान

मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा

प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)

मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५

सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी

सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा

संरक्षक : श्री जमनादास हलाटवाला

सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)

फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८

केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२

Email : ashramindia@ashram.org

Website : www.ashram.org

www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य भाषाएँ	अंग्रेजी भाषा
वार्षिक	₹ ६०	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १००	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २२५	₹ ३२५
आजीवन	₹ ५००	----

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

इस अंक में...

विभिन्न टीवी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

रोज सुबह ६-३० बजे

रोज सुबह ७-३० व रात्रि १० बजे

A2Z NEWS

रोज सुबह ७-३० व रात्रि १० बजे

www.ashram.org/live पर उपलब्ध

✲ 'सुदर्शन न्यूज' चैनल बिग टीवी (चैनल नं. ४२८), डिश टीवी (चैनल नं. ५८१), टाटा स्काई (चैनल नं. ४७७), विडियोकॉन D2H (चैनल नं. ३२२), 'हाथवे' (चैनल नं. २१०) तथा गुजरात एवं महाराष्ट्र में जीटीपीएल (चैनल नं. २४९) पर उपलब्ध है।

✲ 'न्यूज वर्ल्ड' चैनल रिलायंस के बिग टीवी (चैनल नं. ४२५), मध्य प्रदेश में 'हाथवे' (चैनल नं. २२६), छत्तीसगढ़ में 'ग्रांड' (चैनल नं. ४३) एवं उत्तर प्रदेश में 'नेटविजन' (चैनल नं. २४०) पर उपलब्ध है।

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २५ अंक : ३ मूल्य : ₹ ६

भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २७३)

प्रकाशन दिनांक : १ सितम्बर २०१५

पृष्ठ संख्या : ३२+४ (आवरण पृष्ठ सहित)

भाद्रपद-आश्विन वि.सं. २०७२

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम

प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान

मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा

प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)

मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५

सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी

सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा

संरक्षक : श्री जमनादास हलाटवाला

सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)

फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८

केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२

Email : ashramindia@ashram.org

Website : www.ashram.org

www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य भाषाएँ	अंग्रेजी भाषा
वार्षिक	₹ ६०	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १००	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २२५	₹ ३२५
आजीवन	₹ ५००	----

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

इस अंक में...

विभिन्न टीवी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

रोज सुबह ६-३० बजे

रोज सुबह ७-३० व रात्रि १० बजे

रोज सुबह ७-३० व रात्रि १० बजे

www.ashram.org/live पर उपलब्ध

✲ 'सुदर्शन न्यूज' चैनल बिग टीवी (चैनल नं. ४२८), डिश टीवी (चैनल नं. ५८१), टाटा स्काई (चैनल नं. ४७७), विडियोकॉन D2H (चैनल नं. ३२२), 'हाथवे' (चैनल नं. २१०) तथा गुजरात एवं महाराष्ट्र में जीटीपीएल (चैनल नं. २४९) पर उपलब्ध है।

✲ 'न्यूज वर्ल्ड' चैनल रिलायंस के बिग टीवी (चैनल नं. ४२५), मध्य प्रदेश में 'हाथवे' (चैनल नं. २२६), छत्तीसगढ़ में 'ग्रांड' (चैनल नं. ४३) एवं उत्तर प्रदेश में 'नेटविजन' (चैनल नं. २४०) पर उपलब्ध है।

सब सहता हुआ भी संस्कृति के लिए काम किये जा रहा हूँ

– पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

भारत के सभी हितैषियों को एकजुट होना पड़ेगा। संस्कृति की रक्षा में हम सब एक हो जायें। कुछ लोग किसीको भी मोहरा बना के दबाव डालकर हिन्दू संतों और हिन्दू संस्कृति को उखाड़ना चाहें तो हिन्दू अपनी संस्कृति को उखड़ने नहीं देगा। वे लोग मेरे दैवी कार्य में विघ्न डालने के लिए कई बार क्या-क्या षड्यंत्र कर लेते हैं। लेकिन मैं सब सहता हुआ भी संस्कृति के लिए काम किये जा रहा हूँ।

हम चाहते हैं सबका मंगल हो। हम तो यह भी चाहते हैं कि दुर्जनों को भगवान जल्दी सद्बुद्धि दे, नहीं तो समाज सद्बुद्धि दे। जो जिस पार्टी में है... पद का महत्त्व न समझो, अपनी संस्कृति का महत्त्व समझो। पद आज है, कल नहीं है लेकिन संस्कृति तो सदियों से तुम्हारी सेवा करती आ रही है।

आज विश्व को बमों की जरूरत नहीं है, आतंक की जरूरत नहीं है, शोषकों की जरूरत नहीं है, विश्व को अगर जरूरत है तो भारतीय संस्कृति के योग की, ज्ञान की और **वसुधैव कुटुम्बकम्** के भाव की जरूरत है; विश्व में उपद्रव की नहीं, शांति की जरूरत है।

अतः इस संस्कृति की सुरक्षा करना, इस संस्कृति में आपस में संगठित रहना, यह मानव-जाति की, विश्वमानव की सेवा है।

जितना जुल्म सह गये महापुरुष, उतना ही समाज ने उनको पहचाना। आद्य शंकराचार्यजी ने सहा, कबीरजी ने, महात्मा बुद्ध ने, विवेकानंदजी ने सहा... हमारे साथ भी हो रहा है। धीरज रखना। सबका भला हो।

मेरे ऊपर लगाये गये आरोप ११० प्रतिशत बोगस हैं, फेब्रिकेटेड (बनावटी) हैं। फेब्रिकेटेड 'फेब्रिकेटेड' होता है, झूठ 'झूठ' होता है, सत्य 'सत्य' होता है। सत्य की जय होगी!

संतों को बदनामी व जेल क्यों ?
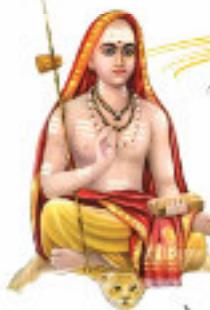
जिन भी संतों-महापुरुषों ने संस्कृति-रक्षा व जन-जागृति का कार्य किया है, उनके खिलाफ षड्यंत्र रचे गये हैं। जगद्गुरु आद्य शंकराचार्यजी का इतना कुप्रचार किया गया कि उनकी माँ के अंतिम संस्कार के लिए उन्हें लकड़ियाँ तक नहीं मिल रही थीं। स्वामी विवेकानंदजी पर झूठा चारित्रिक आरोप लगाकर उन्हें खूब बदनाम किया गया। संत नरसिंह मेहताजी को बदनाम करने व फँसाने के लिए वेश्या को भेजा गया। संत कबीरजी पर शराबी-कबाबी, वेश्यागामी होने के घृणित आरोप लगाये गये। भक्तिमती मीराबाई पर चारित्रिक लांछन लगाये गये एवं उन्हें जान से मारने के कई दुष्प्रयास हुए। संत ज्ञानेश्वरजी को निंदकों द्वारा समाज से बहिष्कृत किया गया था।

वर्तमान में भी शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी, स्वामी केशवानंदजी, श्री कृपालुजी महाराज, संत आशारामजी बापू, साध्वी प्रज्ञा सिंह आदि हमारे संतों को षड्यंत्रों में फँसाकर झूठे आरोप लगा के गिरफ्तार किया गया, बदनाम किया गया और अधिकांश मीडिया द्वारा झूठे आरोपों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया गया।
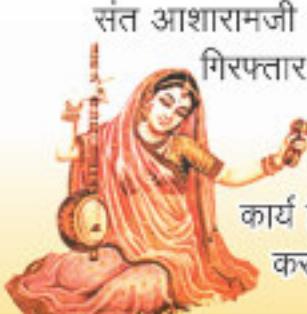
संतों को इतनी बदनामी व जेल क्यों ? संतों द्वारा किये गये जन-जागृति व देशहितकारी कार्य जिन्हें रास नहीं आते, वे संतों को बदनाम करने, उन्हें सताने व जेल भेजने के षड्यंत्र करते हैं।

''पूज्य बापूजी को जमानत मिलनी चाहिए''

– श्री अशोक सिंहलजी,
विश्व हिन्दू परिषद के मुख्य संरक्षक व पूर्व अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष

संत आशारामजी बापू को फँसाया गया है । इस देश में हमारे संतों को बदनाम करने का बहुत बड़ा षड्यंत्र चला है । हिन्दू धर्म, संस्कृति को नष्ट करने के लिए ये केवल हम पर केस ही नहीं चलाते हैं, अपितु गंदे-गंदे आरोप और वह भी कई महीनों तक लगाते रहते हैं।

कानून में किसीको भी फँसाया जा सकता है

७६ साल की उम्र में पूज्य बापूजी को गलत तरीके से फँसाकर प्रताड़ित किया जा रहा है । कांची के शंकराचार्यजी को भी प्रताड़ित किया गया था । कानून में किसीको भी फँसाया जा सकता है । आरोप किसी पर भी लग सकते हैं, आखिर में जीत न्याय (सत्य) की होती है।

मीडिया ट्रायल और ऊधम मचानेवाले एनजीओज् के पीछे कौन ?

हिन्दू धर्म व संस्कृति को नष्ट करने के लिए मीडिया ट्रायल पश्चिम का बड़ा भारी षड्यंत्र है हमारे देश के भीतर ! हमारे यहाँ के बड़े-बड़े संतों के पास लाखों लोग आते हैं तो ये एनजीओज् ऊधम मचाने के लिए वहाँ खड़े हो जाते हैं। देश में विदेशी पैसों से लाखों एनजीओज् चलाये जा रहे हैं, जो इस देश की राजनीति को अपनी मुट्ठी में किये हैं।

बापूजी निर्दोष हैं

बापूजी को माननेवाले बहुत बड़ी संख्या में हैं। मैं मानता हूँ कि जिनकी साधना, सच्चाई न हो वे इतना बड़ा एकत्रीकरण नहीं कर सकते। यह सारा कुछ (आरोप, केस आदि) बनावटी है। केस चल रहा है मगर ७६ वर्ष की उम्र में बापूजी को बहुत कष्ट दिया गया है और इस प्रकार से उनके तथा उनके नाम से हिन्दू संतों और हिन्दू समाज के सिर पर कुल्हाड़ा मारा गया है। बापूजी निर्दोष हैं, बापूजी को जमानत मिलनी चाहिए।

(संदर्भ : दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका, सुदर्शन न्यूज, तेज न्यूज, न्यूज २४)

'सत्य मेरा रक्षक है'

जोधपुर कारावास के दौरान पूज्य बापूजी समय-समय पर ढाढ़स बँधानेवाले अपने संदेशों के द्वारा करोड़ों आहत दिलों को सत्प्रेरणा एवं सांत्वना प्रदान करते रहे हैं।

न्यायालय से बाहर आते समय मीडिया द्वारा स्वास्थ्य के बारे में पूछे जाने पर बापूजी बोले : ''मेरा स्वास्थ्य टूटा है, मैं नहीं टूटा हूँ। मैं क्यों टूटूँगा ! सत्य मेरा रक्षक है।''

'सब बीत जायेगा...'

पूज्य बापूजी : ''सब बीत जायेगा, सत्य की जय होगी और सब आनंद में रहो, मेरी चिंता मत करो।''

देर-सवेर सत्य चमकेगा

पूज्य बापूजी : ''चार संस्कृतियाँ थीं - रोम, यूनान, मिश्र और भारत की । रोम, यूनान, मिश्र को तो उन्होंने मिटा दिया, अभी केवल भारतीय संस्कृति है । उसको बचाने के लिए मैं लगता हूँ इसलिए उनकी (षड्यंत्रकारियों की) आँख की कंकड़ी बना हूँ। बस, और कुछ भी नहीं है । ये (आरोप) सब बनावटी हैं । सब भक्त मौज में रहना, देर-सवेर सत्य चमकेगा।''

'इंडिया टुडे' पत्रिका के मनगढ़ंत आरोपों की हकीकत

पिछले पाँच दशकों में पूज्य बापूजी के सत्संग एवं समाजोत्थान के विभिन्न सेवा-प्रकल्पों द्वारा समाज में बहुआयामी परिवर्तन हुए हैं। इस बात ने देशद्रोहियों व षड्यंत्रकारियों को बेचैन कर दिया। इसीलिए पूज्य बापूजी के ऊपर झूठे व मनगढ़ंत आरोपों का सिलसिला जारी है।

हाल ही में 'इंडिया टुडे' पत्रिका (१७ अगस्त २०१५) द्वारा दुर्भावना से ग्रस्त होकर आश्रम के खिलाफ एक अनर्गल, मनगढ़ंत 'सम्पादकीय' एवं 'आवरण कथा' प्रकाशित किये गये हैं। उसमें 'बापूजी ताँगा चलाते थे, चाय बेचते थे, शराब की तस्करी करते थे, साइकिल मैकेनिक थे।' इस प्रकार की अनर्गल, बेबुनियाद बातें लिखी गयी हैं। कुछ समय पूर्व मीडिया में उछली ऐसी वाहियात बातों का जवाब देते हुए बापूजी ने मीडिया में कहा था : ''बापू घोड़ागाड़ी चलाते थे, चाय बेचते थे, शराब बेचते थे... यह बिल्कुल झूठी बकवास है। अरे, मैं नगरसेठ का बेटा था।''

अपने ही झूठ में फँसी इंडिया टुडे

इंडिया टुडे पत्रिका में लिखा गया है कि पूज्यश्री का जन्म १९४१ में पाकिस्तान में हुआ था जबकि यह वास्तविकता पूरा विश्व जानता है कि १९४१ में पाकिस्तान अस्तित्व में ही नहीं था। यह पत्रिका इस प्रकार तथ्यों को तोड़-मरोड़कर पेश करके क्या हासिल करना चाहती है? हकीकत में अखंड भारत के सिंध प्रांत में बापूजी का जन्म हुआ था। १९४७ में अखंड भारत के विभाजन के समय पूज्यश्री का परिवार अहमदाबाद में आकर बसा था।

आँकड़ों का खेल

इंडिया टुडे के लेख में लिखा गया है कि आश्रम की ११००० समितियाँ हैं, जो चंदा इकट्ठा करती हैं। जबकि आश्रम की १४०० समितियाँ हैं यह जगजाहिर है और आश्रम व समितियाँ कितनी तत्परता से लोक-मांगल्य के दैवी कार्यों में लगी रहती हैं, यह पूरा समाज जानता है। आश्रमों एवं समितियों द्वारा गरीबों में भंडारा करने के लिए चंदा इकट्ठा करने की बात बिल्कुल निराधार और झूठी है। समितियों का आँकड़ा ८ गुना बताया गया है और उनकी निःस्वार्थ सेवा पर आरोप लगाने का दुष्प्रयास किया गया है। इसीसे इस कथा में दिये गये ऐसे मनःकल्पित आँकड़ों की पोल खुल जाती है और लेखक व पत्रिका के बद-इरादों का भी पता चल जाता है। हृदयपूर्वक समाजहित के कार्यों में लगे पुण्यात्माओं एवं समाजसेवी संस्थाओं को यदि इस प्रकार बदनाम किया जाता रहेगा तो कल कौन समाजहित के लिए आगे आयेगा ?

'१० करोड़' के प्रलाप का सच !

इंडिया टुडे ने दावा किया है कि आश्रम से प्रकाशित 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका व 'लोक कल्याण सेतु' समाचार पत्र से प्रतिवर्ष १० करोड़ का मुनाफा होता है। वास्तविकता तो यह है कि ये मासिक पत्र-पत्रिका नाममात्र के मूल्य पर समाज को स्वस्थ, सुखी, सम्मानित जीवन जीने की कला सिखाने हेतु प्रकाशित की जाती हैं।

जिस मूल्य में (५ रु. में) आज पत्र भेजने का डाक का लिफाफा मिलता है, उसी मूल्य में 'ऋषि प्रसाद' व उससे भी आधे मूल्य पर 'लोक कल्याण सेतु' आम जनों के घर में भगवद्ज्ञान का प्रकाश पहुँचाते हैं, ज्ञान, निष्काम कर्म, भक्ति, योग व प्रभुप्रेम की गंगा बहाते हैं, देशप्रेम व संस्कृतिनिष्ठा की उज्ज्वल ज्योति जगाते हैं। उसमें भी करोड़ों की कमाई का झूठा, अनर्गल दावा करनेवालों की मति पर तरस आता है। 'ऋषि प्रसाद' पिछले २५ सालों से और 'लोक कल्याण सेतु' १८ सालों से जिस प्रकार किसी व्यावसायिक विज्ञापन के बिना, अश्लीलता को अपनी सदस्यता बढ़ाने का जरिया बनाये बिना, पत्रिका को ब्लैकमेलिंग करके पैसे कमाने का हथियार बनाये बिना - समाजहितकारी सामग्री अत्यंत अल्प शुल्क पर देशवासियों तक पहुँचा रहे हैं, उस प्रकार क्या झूठे लांछन लगानेवाली इंडिया टुडे पत्रिका कर सकती है ? ऋषि प्रसाद व लोक कल्याण सेतु जैसी जनहितकारी पत्र-पत्रिकाओं के बारे में तर्कहीन, हास्यास्पद अफवाहें फैलानेवालों की इसके पीछे क्या मंशा होगी यह सुज्ञ लोग अच्छी तरह समझ रहे हैं।

रियायती दामोंवाले उत्पादों का दुष्प्रचार

आश्रम द्वारा निर्मित पूज्य बापूजी की अमृतवाणी पर आधारित डीवीडी, वीसीडी, सत्साहित्य, आयुर्वेदिक औषधियाँ, पूजा-पाठ की सामग्री आदि रियायती मूल्य पर उपलब्ध कराये जाते हैं। साधकों को लूट से बचाना व स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग की ओर प्रेरित करना इसका मुख्य उद्देश्य है। इससे करोड़ों की आमदनी होती है - ऐसे दुष्प्रचार द्वारा दुष्प्रचारक स्वदेशी उत्पादों से जनता को दूर रखना चाहते हैं। बाजार में मौजूद अन्य कम्पनियों के दामों के साथ तुलना करें तो लोग स्वयं ही सब समझ जायेंगे।

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू सभी जाति व सम्प्रदाय के लोकसंत हैं। वे सत्संग या मंत्रदीक्षा की कोई फीस भी नहीं लेते। गुरुपूनम पर गुरुदक्षिणा के रूप में बापूजी साधकों से साधना में उन्नत होने का संकल्प कराते हैं, किसी भौतिक दक्षिणा की माँग नहीं करते। **बापूजी कहा करते हैं : ''हमें आपकी कोई भी चीज-वस्तु, रुपया-पैसा नहीं चाहिए। हमें दक्षिणा के रूप में फूल तो क्या, फूल की पँखुड़ी भी नहीं चाहिए। हम तो केवल आपका मंगल चाहते हैं।''** (उपरोक्त वचनों का विडियो देखें : https://goo.gl/zKD2de) करोड़ों साधकों ने ये वचन अनेकानेक बार प्रत्यक्ष सुने हैं तो भला बेतुकी बातें छापनेवाली इंडिया टुडे पत्रिका पर कौन विश्वास करेगा ?

आश्रम-सेवाकार्यों हेतु नहीं माँगा जाता चंदा

संत श्री आशारामजी बापू एक ऐसे संत हैं, जिन्होंने जाति-पाति, अमीर-गरीब, धर्म, मत, पंथ, प्रांत के भेदभाव से करोड़ों लोगों को ऊपर उठाकर एक सूत्र में पिरोते हुए समाजोत्थान व राष्ट्र-निर्माण के कार्य बहुत व्यापक और असरकारक तरीके से किये हैं और कर रहे हैं। इनसे समाज का हर वर्ग लाभान्वित हो रहा है। आश्रम व समितियों द्वारा सतत वर्षभर सेवाकार्य चलते रहते हैं, जिन्हें कोई भी आश्रम की वेबसाइट (www.ashram.org/sewa) एवं आश्रम की पत्र-पत्रिकाओं में कभी भी देख सकता

जिस मूल्य में (५ रु. में) आज पत्र भेजने का डाक का लिफाफा मिलता है, उसी मूल्य में 'ऋषि प्रसाद' व उससे भी आधे मूल्य पर 'लोक कल्याण सेतु' आम जनों के घर में भगवद्ज्ञान का प्रकाश पहुँचाते हैं, ज्ञान, निष्काम कर्म, भक्ति, योग व प्रभुप्रेम की गंगा बहाते हैं, देशप्रेम व संस्कृतिनिष्ठा की उज्ज्वल ज्योति जगाते हैं। उसमें भी करोड़ों की कमाई का झूठा, अनर्गल दावा करनेवालों की मति पर तरस आता है। 'ऋषि प्रसाद' पिछले २५ सालों से और 'लोक कल्याण सेतु' १८ सालों से जिस प्रकार किसी व्यावसायिक विज्ञापन के बिना, अश्लीलता को अपनी सदस्यता बढ़ाने का जरिया बनाये बिना, पत्रिका को ब्लैकमेलिंग करके पैसे कमाने का हथियार बनाये बिना - समाजहितकारी सामग्री अत्यंत अल्प शुल्क पर देशवासियों तक पहुँचा रहे हैं, उस प्रकार क्या झूठे लांछन लगानेवाली इंडिया टुडे पत्रिका कर सकती है ? ऋषि प्रसाद व लोक कल्याण सेतु जैसी जनहितकारी पत्र-पत्रिकाओं के बारे में तर्कहीन, हास्यास्पद अफवाहें फैलानेवालों की इसके पीछे क्या मंशा होगी यह सुज्ञ लोग अच्छी तरह समझ रहे हैं।

रियायती दामोंवाले उत्पादों का दुष्प्रचार

आश्रम द्वारा निर्मित पूज्य बापूजी की अमृतवाणी पर आधारित डीवीडी, वीसीडी, सत्साहित्य, आयुर्वेदिक औषधियाँ, पूजा-पाठ की सामग्री आदि रियायती मूल्य पर उपलब्ध कराये जाते हैं। साधकों को लूट से बचाना व स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग की ओर प्रेरित करना इसका मुख्य उद्देश्य है। इससे करोड़ों की आमदनी होती है - ऐसे दुष्प्रचार द्वारा दुष्प्रचारक स्वदेशी उत्पादों से जनता को दूर रखना चाहते हैं। बाजार में मौजूद अन्य कम्पनियों के दामों के साथ तुलना करें तो लोग स्वयं ही सब समझ जायेंगे।

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू सभी जाति व सम्प्रदाय के लोकसंत हैं। वे सत्संग या मंत्रदीक्षा की कोई फीस भी नहीं लेते। गुरुपूनम पर गुरुदक्षिणा के रूप में बापूजी साधकों से साधना में उन्नत होने का संकल्प कराते हैं, किसी भौतिक दक्षिणा की माँग नहीं करते। **बापूजी कहा करते हैं : ''हमें आपकी कोई भी चीज-वस्तु, रुपया-पैसा नहीं चाहिए। हमें दक्षिणा के रूप में फूल तो क्या, फूल की पँखुड़ी भी नहीं चाहिए। हम तो केवल आपका मंगल चाहते हैं।''** (उपरोक्त वचनों का विडियो देखें : https://goo.gl/zKD2de) करोड़ों साधकों ने ये वचन अनेकानेक बार प्रत्यक्ष सुने हैं तो भला बेतुकी बातें छापनेवाली इंडिया टुडे पत्रिका पर

'१० हजार करोड़... १० हजार करोड़... इतनी सम्पत्ति है... इतनी सम्पत्ति है...' अनर्गल आँकड़े देकर वाहियात प्रलाप कर रहे हैं। जो सम्पत्ति है, वह ट्रस्ट की है।

२००-३०० करोड़ रुपये ले आओ और आश्रम द्वारा चलाये जा रहे जनहितकारी सेवाकार्य चालू रखो तो पूज्य बापूजी व नारायण साँईं, अपनी जितनी भी व्यक्तिगत सम्पत्ति है वह आपके नाम लिख देंगे। उससे शिशु-विहार खोलेंगे। उसमें भी आपको एक ट्रस्टी बना देंगे। - सम्पादक

'इंडिया टुडे' पत्रिका के सम्पादक अरुण पुरी के नाम

लंदन की एक महिला सुनंदा तँवर का खुला पत्र

प्रिय अरुण पुरी,

मैं 'इंडिया टुडे' पत्रिका के १७ अगस्त २०१५ के अंक में आशारामजी बापू के विषय में प्रकाशित एक लेख को पढ़कर तुम्हें यह पत्र लिख रही हूँ। यह लेख अत्यंत गरीबों व आदिवासियों के हित में काम कर रही उनकी संस्था व आश्रम को बदनाम करने के उद्देश्य से लिखा गया झूठ का एक पुलिंदामात्र है।

आपके खोजी पत्रकार ने दावा किया है कि आश्रम की दो पत्रिकाएँ 'ऋषि प्रसाद' व 'लोक कल्याण सेतु' प्रतिवर्ष मोटा मुनाफा कमा रही हैं। मैं आपको बताना चाहती हूँ कि संत आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित ये दोनों मासिक पत्र-पत्रिकाएँ 'नो प्रॉफिट नो लॉस' के आधार पर क्रमशः मात्र ५ रुपये (६० रु. वार्षिक) तथा २.५० रुपये (३० रु. वार्षिक) के मूल्य पर समाज में भारतीय व वैदिक संस्कृति के प्रचार व प्रसार हेतु सदस्यों को घर बैठे पहुँचायी जाती हैं। यदि इस पर भी आपका खोजी पत्रकार इन पत्रिकाओं से प्रतिवर्ष १० करोड़ का मुनाफा आँक रहा है तो कृपया आप भी खुलासा करें कि आप अपनी साप्ताहिक पत्रिका 'इंडिया टुडे' को ४० रुपये में बेचकर कितने अरब रुपये का मुनाफा कमा रहे हैं? आपकी पत्रिका के लेख में आगे यह भी कहा गया कि आशाराम बापू की सीडी बिक्री लगभग ५० लाख प्रतिदिन की है। मैं आपसे कहना चाहती हूँ कि यदि वास्तव में ऐसा होता तो करण जौहर तो काफी पहले ही उन्हें साइन कर चुका होता।

आपके सीनियर व खोजी पत्रकार ने आगे लिखा है कि संत आशाराम बापू के आश्रम को प्रतिवर्ष १५० से २०० करोड़ रुपये चंदे के रूप में प्राप्त होते हैं। इस पर मुझे कहना है कि संत आशाराम बापू किसी भी सत्संग अथवा शिविर के लिए कोई फीस नहीं लेते हैं। और यदि कभी आपको पूज्य बापूजी का सत्संग अथवा उनकी कोई सी.डी. सुनने का सौभाग्य प्राप्त हो जाय तो आपको जानकारी मिलेगी कि बापूजी न तो दीक्षा देते हुए कोई नकद दक्षिणा अथवा कोई वस्तु स्वीकार करते हैं और न ही गुरुपूर्णिमा अथवा अन्य किसी पर्व पर भी दक्षिणा के रूप में रुपये-पैसे की कोई माँग करते हैं।

आश्चर्य का विषय है कि आपका खोजी व सीनियर पत्रकार तो आश्रम द्वारा आयोजित भंडारों एवं अन्य सत्प्रवृत्तियों द्वारा भी धन एकत्रित करने का आरोप लगा रहा है। मैं आपको बता दूँ कि आश्रम द्वारा संचालित भंडारे केवल गरीबों, वनवासियों तथा आदिवासियों में अर्थात् दरिद्रों में विराजमान 'नारायण' की सेवा के लिए आयोजित किये जाते हैं, न कि चंदा एकत्र करने के लिए।

कितने आश्चर्य की बात है कि आपका बिजनेस ग्रुप - 'आज तक' समाचार चैनल, म्यूजिक टुडे चैनल, बिजनेस टुडे चैनल अथवा अन्य कई विदेशी ब्रांड्स के साथ बिजनेस कर आपके लिए धनवर्षा कर रहा है किंतु फिर भी जैसी कि एक कहावत है कि 'पैसे से कभी मनुष्यता नहीं खरीदी जा सकती' - आपका केस भी मुझे वही लगता है। आपने तो मनुष्यता के अत्यंत नीचे स्तर पर उतरकर वेटिकन व ईसाई मिशनरियों द्वारा प्रायोजित यह लेख केवल उनकी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए छापा है ऐसा लगता है। और ऐसा पहली बार भी नहीं है कि जब आप देश के एक महान हिन्दू संत आशारामजी बापू के विरुद्ध ऐसा काम कर रहे हैं।

वेटिकन की ईसाई मिशनरियों का उद्देश्य भारत का 'ईसाईकरण' है। इसीलिए भारतीय संस्कृति व सनातन धर्म का झंडा बुलंद करनेवाले संत आशारामजी बापू तो उनके जन्मजात दुश्मन बने हुए हैं, अतः उन्हें हटाने के लिए ही वे भारत के कुछ 'देशद्रोही व निर्लज्ज' मीडिया को अपनी अकूत दौलत के बल पर आज 'जयचंद' बना रहे हैं। 'इंडिया टुडे' ग्रुप एक अत्यंत धनी व पैसेवाला बिजनेस ग्रुप है किंतु अरुण पुरीजी! जब भी भारतीय संस्कृति व हिन्दू धर्म का इतिहास लिखा जायेगा तो आपका नाम भी आज के ऐसे 'जयचंदों' की सूची में शामिल होगा, जिन्होंने पैसे की लिप्सा के लिए अपनी आत्मा व धर्म दोनों को ही धर्म के सौदागरों के हाथ नीलाम कर दिया था।

भवदीया

सुनंदा तँवर, १६, पालम कोर्ट, लंदन, यू.के.

आखिर क्या है सच ?

जोधपुर केस की हकीकत

लड़की ने एफआईआर में कपोलकल्पित घटना बताते हुए कहा कि जब बापूजी ने उसे कमरे में बुलाया, तब उसकी माँ कमरे के बाहर बैठी हुई थी, पिता भी नजदीक थे। डेढ़ घंटे तक उसके साथ छेड़खानी हुई। वह चिल्लाने लगी तो उसका मुँह दबाकर बंद कर दिया गया। डेढ़ घंटे बाद वह कमरे से बाहर आयी तो घबरायी हुई थी । उसने अपने माता-पिता को कुछ नहीं बताया और सो गयी।

कैसी मनगढ़ंत बातें हैं ! एक लड़की को छिंदवाड़ा से शाहजहाँपुर व वहाँ से जोधपुर (२००० कि.मी.) माँ-बाप के साथ बुलाकर, जिस कमरे के बाहर लड़की की माँ बैठी हो और पास में ही लड़की का बाप भी हो, उस कमरे में कोई साधारण या नासमझ आदमी भी लड़की का मुँह दबाकर डेढ़ घंटे तक कुचेष्टा करता रहे - ऐसा सम्भव नहीं है। यह केस कोई भी पढ़े तो दो मिनट में पता चल जायेगा कि यह साजिश है, राजनीति है, मनगढ़ंत कहानी है।

जोधपुर के पास स्थित मणई कुटिया का वह कमरा, जहाँ से एक सिक्के के गिरने की आवाज भी कई फीट तक जाती है, उस कमरे के बाहर नजदीक ही बैठी माँ को लड़की के चिल्लाने की आवाज सुनाई क्यों नहीं दी ? अगर कमरा व लाइट भी बंद थी तो ऐसी स्थिति में डेढ़ घंटे वहीं बाहर बैठी माँ ने दरवाजा क्यों नहीं खटखटाया ? डेढ़ घंटे तक जिसका यौन-शोषण हुआ हो, ऐसी लड़की अपनी माँ को बताये बिना कैसे रह सकती है ? लड़की फिर सुबह किसान के बच्चों के साथ खेली व खुशी-खुशी २०० रुपये भी दे गयी । डेढ़ घंटे तक अगर उसका मुँह दबाया रहता, वह विरोध करती रहती तो क्या उसके शरीर पर कहीं भी कोई निशान नहीं होता ?

शाहजहाँपुर की लड़की की सहेली ने इंदौर में मीडिया को बताया कि ''मैंने उससे पूछा कि 'तूने बापूजी के ऊपर झूठा आरोप क्यों लगाया ?' तो वह बोली : 'मेरे से जैसा बुलवाते हैं, वैसा मैं बोलती हूँ।'' इससे साफ हो जाता है कि आरोप लगवाने के पीछे गहरी साजिश है।

मेडिकल रिपोर्ट ने दी बापू को क्लीन चिट

जोधपुर केस में लड़की का मेडिकल करनेवाली दिल्ली के लोकनायक अस्पताल की गायनेकोलॉजिस्ट डॉ. शैलजा वर्मा ने अदालत में दिये बयान में स्पष्ट रूप से कहा कि ''मेडिकल के दौरान लड़की के शरीर पर रत्तीभर भी खरोंच के निशान नहीं थे और न ही प्रतिरोध के कोई निशान थे।''

सूरत केस की सच्चाई

आशारामजी बापू पर आरोप लगानेवाली सूरत की महिला ने गांधीनगर कोर्ट में एक अर्जी डालकर बताया कि उसने धारा १६४ के अंतर्गत (बापूजी के खिलाफ) पहले जो बयान दिया था वह डर और भय के कारण दिया था। अब वह १६४ के अंतर्गत दूसरा बयान देकर केस का सत्य उजागर करना चाहती है।

(संदर्भ : गुजरात समाचार)

संत श्री आशारामजी बापू पर आरोप लगानेवाली सूरत की महिला ने कहा : ''धमकाकर मुझसे दुष्कर्म का आरोप लगवाया गया था। चूँकि उस वक्त मैं डरी-सहमी थी, इसलिए सच सामने नहीं ला पायी। अब चूँकि मैं आत्मग्लानि के बोध से ग्रसित हूँ, धारा १६४ के तहत दिये बयान को बदलना चाहती हूँ।''

(संदर्भ : 'दबंग दुनिया' समाचार पत्र)

जीव और शिव में क्या फर्क ?

- पूज्य बापूजी

एक कोई गृहस्थ वेदांती थे । उन्हें 'संत' कह देंगे क्योंकि उनके मन की वासनाएँ शांत हो गयी थीं अथवा 'चाचा' भी कह दो । वे चाचा सब्जी लेने गये थे । पीछे से कोई जिज्ञासु एक प्रश्न पूछने उनके घर पहुँचा । 'ज्ञानी और अज्ञानी में क्या फर्क होता है ?' - यह पूछना था उसको । वह जिज्ञासु पलंग पर टाँग-पर-टाँग चढ़ाकर सेठ हो के बैठा था ।

जब वे चाचा घर आये तो उनसे पूछता है : ''टोपनदास ! आप मुझे बताओ कि ईश्वर में और जीव में क्या फर्क है ? ज्ञानी में और अज्ञानी में क्या फासला है ? जीवात्मा और परमात्मा में क्या फासला है ? ब्रह्मवेत्ता और जगतवेत्ता में क्या फासला है ?''

उस ज्ञानी ने सीधा जवाब न देते हुए देखा कि 'यह भाषा ऐसी बोलता है कि बड़ा विद्वान है ! अब इससे विद्वत्ता से काम नहीं चलेगा, प्रयोग करके दिखाने से काम चलेगा ।' उन्होंने सीधा जवाब न देते हुए अपने नौकर को खूब डाँटा । महाराज... जब नौकर को डाँटा तो उसकी पैंट गीली हो गयी । जीव का स्वभाव होता है भय । जो पलंग पर बैठा था न, वह आदमी उतरकर नीचे हाथ जोड़ के बैठ गया और सिकुड़ गया । टोपनदास सिंहासन पर बैठ के बोलते हैं : ''(अपनी ओर इशारा करके) इसका नाम है 'ब्रह्म' और (उस आदमी की ओर इशारा करते हुए) उसका नाम है 'जीव' । इसका नाम है 'शिव' और उसका नाम है 'जीव' ।''

उस आदमी ने घबराकर पूछा : ''यह कैसे ? जैसे आपके हाथ-पैर हैं, ऐसे हमारे हैं...''

बोले : ''यह ठीक है लेकिन परिस्थितियों से जो भयभीत हो जाय वह जीव है और परिस्थितियों में जो अडिग रहे उसका नाम शिव है ।''

धीरो न द्वेष्टि संसारमात्मानं न दिदृक्षति ।
हर्षामर्षविनिर्मुक्तो न मृतो न च जीवति ।।

'स्थितप्रज्ञ (धीर पुरुष) न संसार के प्रति द्वेष करता है और न आत्मा को देखने की इच्छा करता है । हर्ष और शोक से मुक्त वह न तो मृत है, न जीवित ।' (अष्टावक्र गीता : १८.८३)

तुम्हारे मारने से वह मरता नहीं और तुम्हारे जिलाने से वह जीता नहीं, तुम्हारी प्रशंसा करने से वह बढ़ता नहीं और तुम्हारे द्वारा निंदा से वह उतरता नहीं । उसका नाम है 'ब्रह्मवेत्ता' ।

न दिल में द्वेष धारे थो, न कंहिं सां रीस आ उन जी.
(न दिल में द्वेष धरते हैं, न किसीसे बराबरी करते हैं ।)
न कंहिं दुनिया जी हालत जी,
करे फरियाद थो ज्ञानी.
(न किसी दुनिया की हालत की फरियाद करते हैं ।)

(शेष पृष्ठ २६ पर)

यही आत्मसाक्षात्कार है

- पूज्य बापूजी

(पूज्य बापूजी का ५१वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस : १४ अक्टूबर)

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।
अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥ (गीता : ३.२७)

प्रकृति में ही गुण-कर्म हो रहे हैं लेकिन अहंकार से जो विमूढ़ हो गये, वे अपने को कर्ता-भोक्ता, सुखी-दुःखी मानते हैं। भाव आये तो 'मैं दुःखी हूँ' या 'मैं सुखी हूँ' यह आयेगा अथवा तो 'मेरे को यह करना है' या 'मैंने यह कर लिया...' आयेगा। लेकिन आप समझना, 'यह सब मन का खेल है' तो आप बहुत ऊँची अवस्था में चले जाओगे । उस अवस्था में ऐसा नहीं कि सुन्न-मुन्न हो जाय, आलसी हो जाय, नींद आ जाय... नहीं।

ऊठत बैठत ओई उटाने,
कहत कबीर हम उसी ठिकाने।

ब्राह्मी स्थिति ऐसी ऊँची होती है।

सद्गुरु साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज एवं पूज्य बापूजी

फिर भगवान आपके मित्र हो जायेंगे

जैसे घटाकार वृत्ति होने से घड़ा दिखेगा, सकोराकार वृत्ति से सकोरा (मिट्टी का छोटा प्याला) दिखेगा, ऐसे ही ब्रह्म-परमात्मा के विषय में सुनते हैं तो ब्रह्माकार वृत्ति बनती है। यह संसार इन्द्रियों से दिखता है लेकिन ब्रह्म-परमात्मा सारी इन्द्रियों को देखने की सत्ता देता है तो वह कैसे दिखेगा ?

इन्द्रियों से जो दिखता है वह प्रकृति है, परिवर्तनशील है; इन्द्रियाँ जिसकी सत्ता से देखती हैं वह आत्मा ब्रह्म है और वह हम हैं। ऐसा साक्षात्कार हो जाय तो फिर भगवान भी आपके मित्र हो जायेंगे। जिस भाव से भगवान को देखो, उस भाव में आपका संकल्प पूरा हो जायेगा।

मेरे गुरुजी (साँईं लीलाशाहजी) सत्संग करके कमरे में चले गये, फिर थोड़ी देर बाद बाहर देखा तो सत्संगी खड़े हैं, बोले : ''अभी तक तुम गये नहीं ! रात हो गयी।''

सत्संगी बोले : ''साँईं ! बरसात पड़ रही है न, भगवान को कौन बोले !''

''अरे, तुम्हारा भगवान है, मेरा तो बेटा लगता है !''

सत्संगी जरा नजदीक के थे, बोले : ''साँईं ! बेटे को बोल दो न, बरसात बंद कर दे।''

''बेटे ! बरसात बंद कर दो।''

बरसात बंद हो गयी और वे प्रणाम करके भागे घर। वे लोग घर पहुँचे तो फिर चालू हो गयी बरसात। भगवान को कोई बाप मानता है, कोई बेटा मानता है, कोई सखा और कोई सुहृद मानता है और वास्तव में बेटा भी वही परमात्मा है, बाप भी वही है। अगर वह बेटा नहीं बनता तो उसीमें से बाप कैसे बनेगा ? वही बेटा बन के बाप बनता है। उसको बेटा मानो तो नाराज नहीं होता। और ऐसा नहीं है कि मेरे गुरुजी भगवान को बेटा-ही-बेटा मानते थे, कभी भगवान को बेटा मान लेते थे तो कभी भगवान के बेटे हो जाते थे।

भगवान के साथ, ब्रह्म के साथ गुरुजी की एकाकारता थी। तभी उनके संकल्प से आवरण भंग हुआ और आसुमल से आशाराम बन गये। नहीं तो १२ साल मैं तपस्या करता तो इतना नहीं मिलता, जितना उन शहंशाह (साँई लीलाशाहजी) ने दे डाला ! १२-१२ साल के तीन अनुष्ठान करता तो भी इतना काम नहीं होता।

गुरुजी ने एक सेवक को शास्त्र पढ़ने को दिया, मेरे को बोले : ''ध्यान से सुन !''

ऐ ऐ... आनंद-आनंद... आवरण भंग ! जैसे लवण की पुतली को समुद्र में डुबा दिया, वह गल गयी और नाचने लगी समुद्र हो के। इतना आनंद, ऐसी ब्रह्माकार वृत्ति कि जहाँ तक नजर जाती है उतने में ही मैं नहीं हूँ, उसके पार भी हूँ; नजर तो सीमित है, मैं असीम हूँ। ऐसा अनुभव ब्रह्मवेत्ता को ही होता है।

योगी तो हृदय में एकाग्र होता है, कर्मी को कर्म में निष्कामता होती है, भक्त भाव में रहता है लेकिन यह भाव भी नहीं है, योग भी नहीं है, कर्म भी नहीं है। 'सब हो-हो के बदल जाते हैं, सृष्टियों का महाप्रलय हो जाता है फिर भी जो ज्यों-का-त्यों रहता है, वही मैं हूँ' - ऐसा अनुभव हो जाता है। वह शब्दों में नहीं आयेगा, शब्दों में कुछ भी आयेगा तो थोड़े-में-थोड़ा। उपनिषद् कहती है :

यतो वाचो निवर्तन्ते। अप्राप्य मनसा सह।

जहाँ से मन के सहित वाणी आदि इन्द्रियाँ उसे न पाकर लौट आती हैं... मन से दृश्य दिखेगा, द्रष्टा मन से नहीं दिखेगा। जो मन से दिखेगा वह आधिभौतिक या तो आधिदैविक होगा। अध्यात्म थोड़ा-सा दिखेगा - आनंद, समाधि लेकिन आनंद आया कि नहीं आया, समाधि लगी कि नहीं लगी इनको कौन जानता है ? 'वह मैं हूँ।'

और मजहबों एवं सम्प्रदायों में यह ज्ञान नहीं मिलता तथा हिन्दू धर्म में भी सभी सम्प्रदायों में नहीं मिलता। यह वेदांत सम्प्रदाय में मिलता है। हमारे गुरुजी वेदांती थे, भक्ति भी थी, योग भी था, कर्मयोग भी था लेकिन आखिर में...

सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते।

'हे अर्जुन ! सम्पूर्ण कर्म और पदार्थ ज्ञान (तत्त्वज्ञान) में समाप्त हो जाते हैं।' **(गीता : ४.३३)**

ऐसे आत्मवेत्ता थे मेरे गुरुजी ! जिस पर ब्रह्मज्ञानी गुरु की छाया नहीं है वह चाहे हजारों वर्ष तपस्या कर ले, सोने की लंका पा ले, फिर भी वह बबलू है और जिनको ब्रह्मज्ञानी गुरु मिल गये, वे ४० दिन के अनुष्ठान से आसुमल में से आशाराम बापू बन गये। आशाओं के गुलाम नहीं, आशाओं के दास नहीं, आशाओं के राम !

तेनाधीतं श्रुतं तेन - उसने सब अध्ययन कर लिया... **तेन सर्वमनुष्ठितम्।** उसने सारे अनुष्ठान कर लिये... **येनाशाः पृष्ठतः कृत्वा नैराश्यमवलम्बितम्॥** जिसने इच्छा-वासना छोड़कर आशारहितता का सहारा लिया है।

(हितोपदेश : १.१४६)

पोथियों से ज्ञान नहीं लेना पड़े, अपना ज्ञान छलके। विषय-विकारों से सुख नहीं लेना पड़े, अपना सुख चमचम चमके और टॉनिकों से शक्ति नहीं लेनी पड़े, अपनी शक्ति... !

आत्मसाक्षात्कारी कैसा होता है ?

'गुरु और भगवान जैसे भी हैं (निराकार, साकार, सर्वव्यापक, अगम्य, अगोचर), हमारे हैं बस !' - इससे साधक के चित्त का सारा कचरा धुल जाता है, सारी फरियाद, सारी कमजोरियाँ निकल जाती हैं। भगवान और गुरु के प्रति अपनत्व रखो बस, बहुत सारी गंदगी अपने-आप साफ हो जायेगी। मेरे को तो लगता है कि मेरे साधकों का बड़ा भाग्य है कि हयात आत्मसाक्षात्कारी गुरु मिले हैं। आत्मसाक्षात्कारी कैसा होता है ? कितने लांछन, कितना ये... और अंदर कितनी समता, कितनी मस्ती ! यही आत्मसाक्षात्कार है। आपको दुःख छुए नहीं। दुःखद परिस्थितियाँ आयें लेकिन आपको लगे नहीं। जीवन्मुक्ति है यह, जीते-जी मुक्तात्मा ! इसको 'अविकम्प योग' बोलते हैं।

श्रीकृष्ण युद्ध के सूत्रधार हैं, घोड़ों की रास पकड़ी है, फिर भी निश्चिंत। हम भी अनेक सेवा-प्रवृत्तियों के सूत्रधार हैं

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

असली टकसाल

- पूज्य बापूजी

गुरुजी मिलते हैं तो दो प्रकार के लाभ होते हैं : एक लघु लाभ और दूसरा गुरु लाभ। तंदुरुस्ती, यश, धन, आरोग्य - ये लघु लाभ हैं तथा भगवान की भक्ति, प्रीति, भगवान में शांति और 'भगवान मेरे से दूर नहीं, मेरा आत्मा ही ब्रह्म है' यह ज्ञान - ये गुरु लाभ हैं।

संत कबीरजी मथुरा की यात्रा के लिए निकले। बाँकेबिहारी के मंदिर के पास कबीरजी को एक आदमी दिखा। कबीरजी ने उसको गौर से देखा तो उस आदमी ने भी कबीरजी को गौर से देखा। कबीरजी की आँखों में इतनी गहराई, कबीरजी की आत्मा में भगवान का इतना अनुभव कि वह आदमी उनको देखकर मानो ठगा-सा रह गया!

कबीरजी ने पूछा : ''क्या नाम है तुम्हारा ?
कहाँ से आये हो ?''

उसने कहा : ''मेरा नाम धर्मदास है। मैं माधोगढ, जिला रीवा (मध्य प्रदेश) का रहनेवाला हूँ।''

''तुम इधर कैसे आये ?''

''मैं यहाँ भगवान के दर्शन करने आया हूँ।''

कबीरजी ने पूछा : ''कितनी बार आये हो यहाँ ?''

''हर साल आता हूँ।''

''क्या तुमको सचमुच भगवान के दर्शन हो गये ? तुमको भगवान नहीं मिले हैं, केवल मूर्ति मिली है। मेरा नाम कबीर है। कभी मौका मिले तो काशी आना।'' ऐसा कह के कबीरजी तो चले गये।

कबीरजी की अनुभवयुक्त वाणी ने गैबी (विलक्षण) असर किया। धर्मदास गया तो था बाँकेबिहारी के दर्शन करने लेकिन मंदिर में जाने का अब मन नहीं कर रहा था, घर वापस लौट आया। लग गये कबीरजी के वचन! अब घर में ठाकुरजी की पूजा करता तो देखता कि 'अंतर्यामी ठाकुरजी के बिना ये बाहर के ठाकुरजी की पूजा भी तो नहीं होगी और बाहर के ठाकुरजी की पूजा करके शांत होना है अंतरात्मारूपी ठाकुर में। मुझे निर्दुःख नारायण के दर्शन करने हैं और वह सद्गुरु की कृपा के बिना नहीं होते। वे दिन कब आयेंगे कि मैं सद्गुरु कबीरजी के पास पहुँचूँगा ?' दिन बीता, सप्ताह, एक महीना, ६ महीने बीत गये। एक दिन धर्मदास सब छोड़-छाड़कर कबीरजी के पास पहुँच गये काशी। कबीरजी के पास जाते ही

धरमदास हर्षित मन कीन्हा,
बहुर पुरुष मोहि दर्शन दीन्हा।

धर्मदास का मन हर्षित हो गया। जिनको मथुरा में देखा था, काशी में फिर उन्हीं पुरुष के दर्शन हो गये।

मन अपने तब कीन्ह विचारा,
इनकर ज्ञान महा टकसारा।

यह कबीरजी का ज्ञान महा टकसाल है। यहाँ तो सत्य की अशरफियाँ ढलती हैं, आनंद की गिन्नियाँ बनती हैं। मैं कहाँ अपनी तिजोरी में कंकड़-पत्थर इकट्ठे कर रहा था! आपका जीवन और आपका दर्शन सच्चा सुखदायी है। ये संत अपने सत्संग से, दर्शन से सुख, शांति और आनंदरूपी गिन्नियाँ हृदय-तिजोरियों में भर देते हैं।

इतना कह मन कीन्ह विचारा,

तब कबीर उन ओर निहारा ।

तब कबीरजी ने धर्मदास की ओर गहराई से देखा । ऐसा लगा मानो बिछुड़ा हुआ सत्शिष्य गुरुजी को मिला हो । हर्षित मन से कबीरजी ने कहा :

आओ धरमदास पगु धारो... आओ धर्मदास ! अब काशी में पैर जमाओ । मेरे सामने बैठो । चिहुंक चिहुंक तुम काहे निहारो... टुकुर-टुकुर क्या मेरे को देख रहे हो ? धरमदास हम तुमको चीन्हा... धर्मदास हमने तुमको पहचान लिया । तुम सत्पात्र हो, सत्शिष्य हो इसलिए मैंने तुमको असली बात कह दी थी । बहुत दिन में दरसन दीन्हा । फिर भी तुमने बहुत दिन के बाद मेरे को दर्शन दिया, ६ महीने हो गये ।

कबीरजी ने थोड़ी धर्मदास पर कृपादृष्टि डाली, सत्संग सुनाया । धर्मदास गद्गद हो गये, धन्य-धन्य हो गये । सोचा कि 'मैंने आज तक तो रुपये-पैसों के नाम पर नश्वर चीजें इकट्ठी की हैं । मैं उन्हें खर्च करने के लिए जाऊँगा तो मेरे को समय देना पड़ेगा ।' व्यवस्थापकों को संदेशा भेज दिया : 'जो भी मेरी माल-सम्पत्ति, खेत-मकान हैं, गरीबों में बाँट दो । भंडारा कर दो, शुभ कार्यों में लगा दो । मैं फकीरी ले रहा हूँ । संत कबीरजी की टकसाल में मेरा प्रवेश हो गया है । ब्रह्मज्ञानी संत मिल गये हैं । हृदय में आत्मतीर्थ का साक्षात्कार करूँगा । इस सम्पत्ति को सँभालने या बाँटने का मेरे पास समय नहीं है ।'

मुनीमों ने तो रीवा जिले में डंका बजा दिया कि जिनको भी जो आवश्यकता है ऐसे गरीब-गुरबे और सात्त्विक लोग जो समाज की सेवा करते हैं आश्रम-मंदिरवाले, वे आकर ले जायें । जुटाने के लिए तो जीवनभर लगा दिया लेकिन छोड़ने के लिए मृत्यु का एक झटका काफी है अथवा छोड़ना है तो 'भाई ! ले जाओ ।' बस, इतना ही बोलना है । कबीरजी के चरणों में धर्मदास लग गये तो लग गये और अपने आत्मा-परमात्मा के परम सुख को पाया ।

धर्मदास सन् १४२३ में जन्मे थे और करीब १२० वर्ष तक धरती पर रहे । कबीरजी का कृपा-प्रसाद पाकर लोगों को महसूस करा दिया कि बाहर का धन कंकड़-पत्थर से ज्यादा मूल्यवान नहीं है । यह राख बन जानेवाले शरीर के लिए है, बाहर का है । असली धन तो सत्संग है, भगवान का नाम है, भगवान की शांति-प्रीति है । असली धन तो परमात्म-प्रसाद है ।

इन तिथियों का लाभ लेना न भूलें

२४ सितम्बर : पद्मा-परिवर्तिनी एकादशी (व्रत करने से व इसका माहात्म्य पढ़ने-सुनने से मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है ।)

२८ सितम्बर : चन्द्रग्रहण (भूभाग में ग्रहण समय : सुबह ६-३६ से ९-५८ तक)
(भारत के पश्चिम भाग में गुजरात और राजस्थान के कुछ क्षेत्रों में दिखेगा व यहाँ पर ही नियम पालनीय हैं ।)
(ग्रहण के समय पालनीय आवश्यक नियमों की जानकारी के लिए पढ़ें आश्रम से प्रकाशित पुस्तक : 'क्या करें, क्या न करें ?' तथा 'ऋषि प्रसाद', सितम्बर २०१४, पृष्ठ २०)

४ अक्टूबर : रविवारी सप्तमी (सूर्योदय से दोपहर २-४१ तक)

८ अक्टूबर : इंदिरा एकादशी (इसके व्रत से बड़े-बड़े पापों का नाश तथा नीच योनि में पड़े हुए पितरों की सद्गति हो जाती है ।)

१२ अक्टूबर : सर्वपित्री दर्श अमावस्या, सोमवती अमावस्या (सूर्योदय से १३ अक्टूबर प्रातः ५-३७ तक)

१३ अक्टूबर : शारदीय नवरात्र प्रारम्भ

१४ अक्टूबर : पूज्य संत श्री आशारामजी बापू का ५१वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस

प्रकृति के बहाने परमात्मा की याद

भगवान रामजी ने वनवास के दौरान बालि को मारकर सुग्रीव को किष्किंधा का राजा बना दिया था और स्वयं एक पर्वत पर वास कर रहे थे। प्रकृति की सुरम्य छटा के मनोहर वर्णन के बहाने रामजी ने अपने अनुज लक्ष्मण को बहुत ऊँचा ज्ञान दिया है। ऋतु-परिवर्तन एवं प्राकृतिक वर्णन को निमित्त बनाकर अनेक श्रेष्ठ जीवन-मूल्यों को समझाया है। रामजी कहते हैं :

बरषा बिगत सरद रितु आई।
लछिमन देखहु परम सुहाई॥

हे लक्ष्मण ! देखो, वर्षा ऋतु बीत गयी और परम सुंदर शरद ऋतु आ गयी। अगस्त्य के तारे ने उदय होकर मार्ग के जल को सोख लिया, जैसे संतोष लोभ को सोख लेता है। नदियों और तालाबों का निर्मल जल ऐसी शोभा पा रहा है जैसे मद और मोह से रहित संतों का हृदय। नदी और तालाबों का जल धीरे-धीरे सूख रहा है, जैसे ज्ञानी (विवेकी) पुरुष ममता का त्याग करते हैं। शरद ऋतु जानकर खंजन पक्षी आ गये, जैसे समय पाकर सुंदर सुकृत आ जाते हैं (पुण्य प्रकट हो जाते हैं)। जल के कम हो जाने से मछलियाँ व्याकुल हो रही हैं, जैसे मूर्ख (विवेकशून्य) कुटुम्बी (गृहस्थ) धन के बिना व्याकुल होता है। बिना बादलों का निर्मल आकाश ऐसा शोभित हो रहा है जैसे भगवद्भक्त सब आशाओं को छोड़कर सुशोभित होते हैं। कहीं-कहीं शरद ऋतु की थोड़ी-थोड़ी वर्षा हो रही है, जैसे कोई विरले ही लोग मेरी भक्ति पाते हैं।

सुखी मीन जे नीर अगाधा।
जिमि हरि सरन न एकउ बाधा॥

जो मछलियाँ अथाह जल में हैं वे सुखी हैं, जैसे श्रीहरि की शरण में चले जाने पर एक भी बाधा नहीं रहती।

कमलों के खिलने से तालाब ऐसी शोभा दे रहा है जैसे निर्गुण ब्रह्म सगुण होने पर शोभित होता है। रात्रि देखकर चकवे के मन में वैसे ही दुःख हो रहा है जैसे दूसरे की सम्पत्ति देखकर दुष्ट को दुःख होता है। पपीहा रट लगाये है, उसको बड़ी प्यास है, जैसे शंकरजी का द्रोही सुख नहीं पाता (सुख के लिए खीझता रहता है)। शरद ऋतु के ताप को रात के समय चन्द्रमा हर लेता है, जैसे संतों के दर्शन से पाप दूर हो जाते हैं। चकोरों के समुदाय चन्द्रमा को देखकर इस प्रकार टकटकी लगाये हैं जैसे भगवद्भक्त भगवान को पाकर (अपलक नेत्रों से) उनके दर्शन करते हैं।

रामजी कहते हैं : हे भ्राता लक्ष्मण ! वर्षा ऋतु के कारण पृथ्वी पर जो जीव भर गये थे, वे शरद ऋतु को पाकर वैसे ही नष्ट हो गये, जैसे सद्गुरु के मिल जाने पर संदेह और भ्रम के समूह नष्ट हो जाते हैं।

लक्ष्मणजी को बात-बात में कैसा ऊँचा ज्ञान मिला रामजी के सत्संग-सान्निध्य से ! ऐसा ही अति दुर्लभ ब्रह्मज्ञान का प्रसाद पूज्य बापूजी के सत्संग-सान्निध्य एवं प्रेरक जीवन से करोड़ों लोगों को सहज में मिला है। भगवान और महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर हम भी अपना जीवन उन्नत कर सकते हैं। व्यवहारकाल में भी भगवान की, भगवद्ज्ञान की स्मृति बनाये रखकर अपने जीवन को भगवद्-रस, भगवद्-शांति, भगवद्-आनंद से ओतप्रोत कर सकते हैं।

****

बापूजी का करुणामय हृदय !

पूज्य बापूजी के भानजे श्री शंकरभाई (शहंशाहजी) ने पूज्यश्री का एक संस्मरण बताया था : "जब बापूजी आबू की नल गुफा में रहकर साधना करते थे तो मैं वहाँ जाता रहता था। एक बार उपवास पूरा होने के बाद बापूजी मुझे बोले : "मुझे बहुत भूख लगी है, तू कुछ ले आ।" मैं ढूँढ़ते हुए दुकान पर गया तो केवल ३ ही केले मिले। मैं ले आया। बापूजी ने उनमें से १ केला मुझे दिया और २ केले अपने लिए रखकर दोपहर का साधना का नियम पूरा करने लगे। नियम पूरा हुआ तो सामने गौमाता आ रही थी। बापूजी ने १ केला गाय को खिला दिया। बापूजी को बहुत भूख लगी थी, फिर भी उन्होंने १ केला मुझे और १ केला गाय को दे दिया। स्वयं १ ही केला खाया। बापूजी का ऐसा करुणामय हृदय, दयालु स्वभाव कि मैं तो देखता ही रह गया !"
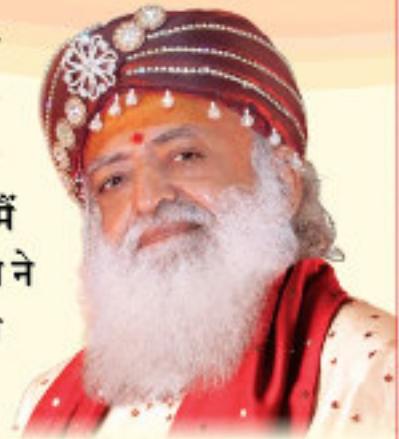
दरअसल, पूज्य बापूजी के लिए प्राणिमात्र उनका आत्मस्वरूप ही है, इसलिए उनका यह स्वभाव सहज, स्वाभाविक है। आज जो कुछ भी मानवीय संवेदना, जीवदया, परदुःखकातरता, सद्भाव, सहृदयता धरती पर देखने को मिलती है, वह स्वयं कष्ट सहकर दूसरों को सुख देनेवाले ऐसे 'सर्वभूतहिते रताः' महापुरुषों की तपस्या, श्रेष्ठ समझ व सत्संग का ही तो फल है।

(पृष्ठ १८ 'कैसे होते हैं परमात्मा...' का शेष) प्राण-अपान की गति को मंद हो जाने दो और वाक् में, जीभ में बिल्कुल मत आओ माने शब्द की कल्पना मत करो, किसी भी शब्द का आधार मत लो; और सोमो यत्रातिरिच्यते - सोमरस का अनुभव करो अर्थात् आनंद लो, वहाँ परमानंद की अनुभूति करो।

तीन बातें हुईं - एक तो प्राण-अपान का खयाल छोड़ दो, दूसरी - किसी भी शब्द को अपने मन में मत आने दो, मन को निःशब्द कर दो और तीसरी - केवल रसात्मक अवस्था में जाकर बैठ जाओ। तब तत्र संजायते मनः - वहाँ मन का सम्यक् उत्पादन होता है माने ध्यानाकार मन की उत्पत्ति वहीं होती है, वहीं जाकर मनुष्य ध्यानस्थ हो जाता है।

कैसे होते हैं परमात्मा वामन से विराट ?

(वामन जयंती : २५ सितम्बर)

ऊर्ध्वं प्राणमुन्नयत्यपानं प्रत्यगस्यति ।
मध्ये वामनमासीनं विश्वे देवा उपासते ॥

(कठोपनिषद् : २.२.३)

प्राण को तो ऊपर फेंक देता है और अपानवायु को नीचे फेंक देता है और दोनों के बीच में बैठा हुआ है वामन। वामन भगवान का नाम तो आप जानते ही हैं न ! नन्हा-सा ईश्वर बैठा हुआ है वहाँ। उस नन्हे को जब तक तुम अपनी बलि नहीं दे देते, तब तक तो वह नन्हा-मुन्ना वामन बनकर बैठा रहता है और जब बलिदान (राजा बलि की कथा के संदर्भ में) हो जाता है, तब वह विराट हो जाता है - ऐसा वामन है, जो ब्रह्म हो जाता है। जब तक तुमने अपने अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय कोष को उसके प्रति अर्पित नहीं किया, जब तक तुम तीन पाद अर्पित नहीं करोगे, तब तक चतुर्थ पाद की प्राप्ति नहीं होती है। तीन पाद अर्पित करने पड़ते हैं, चतुर्थ पाद वह स्वयं है। स्थूल शरीर एक पाद, सूक्ष्म शरीर द्वितीय पाद और कारण शरीर तो अविद्यात्मक ही है, पाद-वाद नहीं है। वह तो तुरीय के ज्ञानमात्र से ही कि 'यह तो वामन नहीं है, यह तो ब्रह्म है' - यह पहचान लेने मात्र से ही तृतीय पाद मिट जाता है और चतुर्थ पाद की प्राप्ति होती है।

मन की उपाधि से ही ब्रह्म वामन बना हुआ है। अगर मन की उपाधि न हो तो ब्रह्म वामन न हो। वह कहाँ बैठा हुआ है ? कि प्राण और अपान की संधि में। जहाँ से वाणी को प्रेरणा मिलती है माने अग्नि-मंथन होता है और जहाँ प्राण व अपान का पृथक्करण होता है, वहाँ ध्यान करो। सोमो यत्रातिरिच्यते - बोले भाई कि चलो यहाँ से, अब ध्यान करेंगे। क्या है वहाँ ? कि सोमो = सोमरस-चन्द्रमा-परमात्मा की आह्लादिनी शक्ति, मन का अधिदेवता। मन का जो अधिदेवता है उसको चन्द्र बोलते हैं; यही चाँदनी है, यही चन्द्रिका है, यही सोम है, जिसको शंकरजी अपने सिर पर धारण करते हैं। इसको हृदय में धारण नहीं करते, इसको सिर पर धारण करते हैं। शंकरजी ने इस मन को हृदय में से उठाकर अपने सिर पर धारण कर लिया क्योंकि वहाँ भगवान के चरण का जो धोवन गंगाजी हैं, उसको जटा में रखते हैं न ! तो अपने हृदयस्थ मन को निकालकर वहीं लगाते हैं, वहीं रखते हैं।

अब देखो, सोम माने सोमरस - जहाँ स्वाद आता है, जहाँ आनंद की अनुभूति होती है। अग्निर्यत्राभिमथ्यते का अर्थ है कि वाक् का प्रयोग मत करो, मौन हो जाओ और जहाँ से वाणी को प्रेरणा मिलती है उस अभिमंथन के स्थान पर चलो। और वायुर्यत्राधिरुध्यते का अर्थ है प्राण और अपानवायु के चक्कर में न पड़कर इनकी उपेक्षा कर दो माने इनको मंद हो जाने दो -

प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ ॥

(गीता : ५.२७)

(शेष पृष्ठ १७ पर)

शंका : ब्रह्मविद्या का प्रयोजन मोक्ष की सिद्धि है और वह ब्रह्मात्मैक्य-बोध (आत्मा और ब्रह्म की एकता का ज्ञान) से होती है। ठीक है, पर वह मोक्ष नित्य है या अनित्य ?

यदि अनित्य है तो अनित्य से वैराग्य होना चाहिए। अनित्य मोक्ष की आवश्यकता ही नहीं। यदि मोक्ष नित्य है तो वह साधनजन्य नहीं होगा क्योंकि नित्य वस्तु को प्राप्त करने के लिए साधन की आवश्यकता नहीं होती। उस दशा में शास्त्र-विहित सब साधन अनावश्यक सिद्ध होंगे। यदि कहो कि ब्रह्मज्ञान की सार्थकता है ही तो यह तभी सम्भव है जब बंधन अज्ञान से सिद्ध हो। परंतु आत्मा जब ब्रह्म ही है, तब उसमें अज्ञान और तज्जन्य (उसके द्वारा उत्पन्न) भ्रम की उपस्थापना हास्यास्पद है। असल में आत्मा ब्रह्म नहीं है, जैसा प्रत्येक व्यक्ति का सहज अनुभव भी है और जैसा शास्त्र में दोनों का भेद बताया भी गया है। जीव अल्पज्ञ, परिच्छिन्न, संसारी है और ब्रह्म सर्वज्ञ, अपरिच्छिन्न, सर्वशक्तिमान है। बंधन भी प्रत्येक जीव का सहज अनुभव है। अतः बंधन सत्य है और बंधन की निवृत्ति ज्ञान से नहीं हो सकती, वह कर्म, उपासना, योग की अपेक्षा रखती है। अतः ब्रह्मविद्या का विचार निरर्थक है।

समाधान : मोक्ष नित्य है फिर भी इसके लिए जो साधन शास्त्र में वर्णित हैं वे व्यर्थ नहीं हैं। मोक्ष आत्मा का अपना स्वरूप ही है, अन्य नहीं है। हम कहीं बँधे नहीं हैं। बंधन एक कल्पना है, भ्रम है। विचार करके देखो कि बचपन से अब तक हम कितनों के साथ बँधे और छूटे।

धन के साथ बँधे, वह चला गया। स्त्री, पुत्र, मित्र सबके साथ अपने को बँधा समझते रहे किंतु सब बदलता गया। इनके आने पर बंधन का भ्रम होता है पर हम ज्यों-के-त्यों हैं। हमें कोई बाँध नहीं सकता। सपनों के समान ये आते-जाते रहते हैं और मोक्ष अपना सहज स्वरूप है। अपने स्वरूपभूत मोक्ष की प्राप्ति में जो प्रतिबंध है - बंधन का भ्रम है, उसे दूर करने के लिए साधन की आवश्यकता है और इसीलिए शास्त्र की सार्थकता है। मोक्ष को उत्पन्न करने के लिए साधन की आवश्यकता नहीं है, अन्यथा मोक्ष भी निश्चित अनित्य ही होगा। भगवान शंकराचार्यजी कहते हैं :

रोगार्तस्यैव रोगनिवृत्तौ स्वस्थता।

स्वास्थ्य हमारा स्वरूप है किंतु सर्दी-गर्मी से, वात-पित्त-कफ के प्रकोप से या और किसी कारण से शरीर में रोग आ गया तो उसके निवारण के लिए औषध-सेवन कर लेते हैं। स्वस्थ तो हम रोग से पहले भी थे और रोगनिवृत्ति के बाद भी रहेंगे। इसी प्रकार मोक्ष अपना स्वरूप है। उसमें जो बंधन का भ्रम आ गया है, उसे दूर करने के लिए ब्रह्मज्ञान की आवश्यकता है। ब्रह्मज्ञान के लिए ब्रह्मविचार की आवश्यकता है। और शास्त्र ब्रह्मविचाररूप हैं इसलिए शास्त्र की आवश्यकता है। शास्त्र में वर्णित सभी साधन परस्पर ब्रह्मज्ञान में सहकारी हैं।

माँ का दूध : शिशु के लिए प्रकृतिप्रदत्त उपहार

(गतांक के 'प्रसूता की सँभाल' से आगे)

आयुर्वेद व आधुनिक विज्ञान - दोनों के अनुसार नवजात शिशु के लिए माँ का दूध ही सबसे उत्तम व सम्पूर्ण आहार है । महर्षि वाग्भट्टाचार्यजी कहते हैं :

मातुरेव पिबेत्स्तन्यं तद्ध्यलं देहवृद्धये ।

(अष्टांगहृदयम्, उत्तरस्थानम् : १.१५)

शिशु के पोषण के लिए मातृदुग्ध परम श्रेष्ठ है। गर्भावस्था में गर्भ का पोषण माँ के आहाररस के जिस अंश से होता है, प्रसूति के पश्चात् उसी अंश से स्तनों में दूध की निर्मिति होती है, अतः बालक के लिए वह दूध जन्म से ही उसकी प्रकृति के अनुकूल हो जाता है। स्तनपान से शिशु को पौष्टिक आहार के साथ-साथ माँ का प्रेम व वात्सल्य भी प्राप्त होता है, जो उसके संतुलित विकास के लिए अति आवश्यक होता है। परंतु वर्तमान में यह मान्यता बन गयी है कि स्तनपान कराने से शारीरिक सुंदरता कम हो जाती है। इस डर से कुछ माताएँ बच्चे को स्तनपान नहीं करातीं, बोतल से दूध पिलाती हैं। परिणामस्वरूप बच्चे का पूर्ण विकास नहीं होता और उन माताओं को स्तन कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियाँ होने की सम्भावना बढ़ जाती है। विभिन्न प्रयोगों के बाद अब वैज्ञानिक भी तटस्थता से स्वीकार करने लगे हैं कि 'स्तनपान कराने से माँ व बच्चे दोनों को लाभ होता है।'

स्तनपान से शिशु को होनेवाले लाभ

(१) स्तनपान न करनेवाले बच्चों की अपेक्षा स्तनपान करनेवाले बच्चों का पोषण उच्च स्तर का होता है।

(२) जो बच्चे ज्यादा समय तक माँ का दूध पीते हैं, उनकी बौद्धिक क्षमता बढ़ती है। वे ज्यादा कुशाग्र बुद्धि के होते हैं।

(३) माँ और शिशु के बीच भावनात्मक रिश्ता मजबूत होता है।

(४) प्रसूति के पश्चात् माता के स्तनों से एक पीला-सा द्रव पदार्थ निकलता है, जिसे 'कोलोस्ट्रम' कहते हैं। इसे शिशु को पिलाना लाभकारी है क्योंकि इसके सेवन से शिशु के पेट में संचित अब तक की गंदगी दूर हो जाती है और उसकी रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ती है। प्रोटीनयुक्त यह द्रव शिशु की पाचनक्रिया को भी सक्रिय कर देता है।

(५) माँ के दूध में रोगप्रतिकारक तत्त्व भरपूर होते हैं, जो शिशु की हृदयरोग, मोटापा, मधुमेह, दमा एवं अन्य कई रोगों से सुरक्षा करते हैं। इनसे संक्रामक रोगों का खतरा ५० से ९५ प्रतिशत कम होता है।

(६) एक महीने से एक साल की उम्र तक शिशु में 'अचानक शिशु मृत्यु संलक्षण' का खतरा रहता है। माँ का दूध शिशु को इससे बचाता है।

स्तनपान कराने से माँ को होनेवाले लाभ

(१) स्तनपान कराते समय माँ के शरीर में ऑक्सीटोसिन हार्मोन स्रावित होता है, जो गर्भाशय को सिकोड़कर प्रसूति के पूर्व के आकार का कर देता है। यह हार्मोन तनावमुक्ति तथा सुख-बोध की अनुभूति भी प्रदान करता है।

(२) जितने लम्बे समय तक माँ शिशु को अपना दूध पिलाती है, उतनी अधिक अंडाशय व स्तन के कैंसर जैसे

(शेष पृष्ठ २५ पर)

धन-धान्य, यश की वृद्धि के साथ अंतरात्मा की चिन्मय तृप्ति दिलाता श्राद्ध-कर्म

(श्राद्ध पक्ष : २७ सितम्बर से १२ अक्टूबर)

श्राद्ध पक्ष के दिनों में पितरों को अपने-अपने कुल में जाने की छूटछाट का विधान है। अतः श्राद्ध पक्ष में पितर विचरण करते हैं। जिनके यहाँ से अपने पितरों को अर्घ्य, कव्य मिलता है, उनके पितर तृप्त होकर जाते हैं और आशीर्वाद देते हैं। उनके कुल-खानदान में अच्छी संतानें आती हैं। जो श्राद्ध नहीं करते हैं उनके पितर अतृप्त होकर निःश्वास छोड़ के जाते हैं कि 'धिक्कार है !' ऐसे लोग फिर अतृप्त रहते हैं।

आपका एक मास बीतता है तो पितृलोक का एक दिन (दिन+रात) होता है। आप वर्ष में एक बार भी विधिवत् श्राद्ध कर लेते हैं तो आपके पितर तृप्त होते हैं। आप जो खिलाते हैं उन चीजों का केवल भाव ही उन तक पहुँचता है और उस भाव से ही वे तृप्त होते हैं। हमारे पूर्वज मरकर जिस लोक में या जिस योनि में गये हैं, उसके अनुरूप उन्हें तृप्ति देनेवाला भोग मिलेगा।

पितरों के उद्धार, कल्याण के लिए पानी रखकर 'श्रीमद्भगवद्गीता' के ७वें अध्याय का माहात्म्यसहित पाठ करें और जिसका श्राद्ध करते हैं, उसके कल्याण व आत्मशांति के निमित्त वह पानी हाथ में लेकर तुलसी के पौधे में छोड़ दें तो आपका संकल्प जिनके लिए श्राद्ध करते हो उनको बड़ी मदद देगा और उनका आशीर्वाद आपका कल्याण करेगा।

मुझे बड़ा लाभ हुआ

श्राद्ध पक्ष का मुझे बहुत लाभ मिला। जब हमारे पिता का श्राद्ध होता है तो सिर्फ पिता के लिए मैं नहीं करता हूँ। जो भी कुल-खानदान में मर गये, उनके लिए भी कर लो। यक्षों, गंधर्वों, जो अवनत हो के मर गये, जिनकी अकाल मृत्यु हो गयी है, जिनका किसीने पिंडदान नहीं किया हो, जिनका कोई नहीं है, जो ब्रह्मचारी थे, उन सबकी सद्गति के लिए भी हम करते हैं तो उस दिन वह कर्म करते-करते हमारे हृदय में बड़ा आनंद, बड़ा रस, बड़े चिन्मय सुख का एहसास होता है। नाग, यक्ष, किन्नर - जो भी प्राणिमात्र हैं, उन सभीको मैं श्राद्ध के द्वारा तृप्त करता हूँ तो बड़ा अच्छा लगता है। बाहर का लाभ धन-धान्य, यश तो बढ़ता ही है लेकिन पितृश्राद्ध करने से अंतरात्मा की चिन्मय तृप्ति का एहसास भी होता है।

श्राद्ध का मंत्र

ॐ, ह्रीं, श्रीं, क्लीं - ये चारों बीजमंत्र हैं और स्वधा देवी पितरों को तृप्त करने में सक्षम हैं तो उसी

देवी के लिए यह मंत्र उच्चारण करना है :

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वधादेव्यै स्वाहा ।

जो जाने-अनजाने रह गये हों, जिनकी मृत्यु की तिथि का पता न हो, उनका भी श्राद्ध, तर्पण सर्वपित्री अमावस्या को होता है । आप ज्यादा विधि-विधान न भी कर पायें तो थोड़ी-सी विधि में भी इस मंत्र की सहायता से काम चल जायेगा ।

सर्वपित्री अमावस्या के दिन कर्मकांड करके इस मंत्र का जप करोगे तो करते समय कोई भी त्रुटि रही होगी तो वह पूर्ण हो जायेगी और पितरों को तृप्ति मिलेगी । पितरों की तृप्ति से आपके कुल-खानदान में श्रेष्ठ आत्माओं का अवतरण तथा धन-धान्य व सुख-सम्पदा का स्थायीकरण होता है । श्राद्ध के दिनों में ब्रह्मचर्य का पालन करें और ब्राह्मण भी ब्रह्मचर्य का पालन करके श्राद्ध ग्रहण करने आये । ब्राह्मण जरदा, तम्बाकू आदि मलिनता से बचा हुआ हो ।

यदि श्राद्ध करने का सामर्थ्य न हो तो...

समझो श्राद्ध करने की क्षमता, शक्ति, रुपया-पैसा नहीं है तो श्राद्ध के दिन ११.३६ से १२.२४ के बीच के समय (कुतप वेला) में गाय को चारा खिला दें । चारा खरीदने का भी पैसा नहीं है, ऐसी कोई समस्या है तो उस समय दोनों भुजाएँ ऊँची कर लें, आँखें बंद करके सूर्यनारायण का ध्यान करें : 'हमारे पिता को, दादा को, फलाने को आप तृप्त करें, उन्हें आप सुख दें, आप समर्थ हैं । मेरे पास धन नहीं है, सामग्री नहीं है, विधि का ज्ञान नहीं है, घर में कोई करने-करानेवाला नहीं है, मैं असमर्थ हूँ लेकिन आपके लिए मेरा सद्‌भाव है, श्रद्धा है । इससे भी आप तृप्त हो सकते हैं ।' इससे आपको मंगलमय लाभ होगा ।

भगवान राम ने श्राद्ध किया पुष्कर में कंदमूल से और अयोध्या गये तो फिर खीर, पूड़ी आदि व्यंजनों से किया । एकनाथजी महाराज ने भी श्राद्ध किया । ऐसे-ऐसे महापुरुषों ने श्राद्ध-कर्म किया तो आप भी अपने पितरों की तृप्ति के लिए श्राद्ध-कर्म करें ।

सर्वपित्री अमावस्या पर 'सामूहिक श्राद्ध' का आयोजन

जिन्हें अपने पूर्वजों की परलोकगमन की तिथियाँ मालूम नहीं हैं, उन्हें सर्वपित्री दर्श अमावस्या (१२ अक्टूबर २०१५) के दिन श्राद्ध-कर्म करना चाहिए । संत श्री आशारामजी आश्रम की विभिन्न शाखाओं में इस दिन 'सामूहिक श्राद्ध' का आयोजन होता है, जिसमें आप सहभागी हो सकते हैं । इस हेतु अपने नजदीकी आश्रम में ५ अक्टूबर तक पंजीकरण करा लें ।

श्राद्ध हेतु अपने साथ दो बड़ी थाली, दो कटोरी, दो चम्मच, ताँबे का एक लोटा और आसन लेकर आयें । अन्य आवश्यक सामग्री श्राद्ध-स्थल पर उपलब्ध रहेगी । श्राद्ध-कर्म सम्पन्न होने के बाद लाये हुए बर्तन सब वापस ले जाने हैं । अधिक जानकारी हेतु पहले ही अपने नजदीकी आश्रम से सम्पर्क कर लें ।

(श्राद्ध से संबंधित विस्तृत जानकारी हेतु आश्रम की पुस्तक 'श्राद्ध-महिमा' पढ़ें ।)
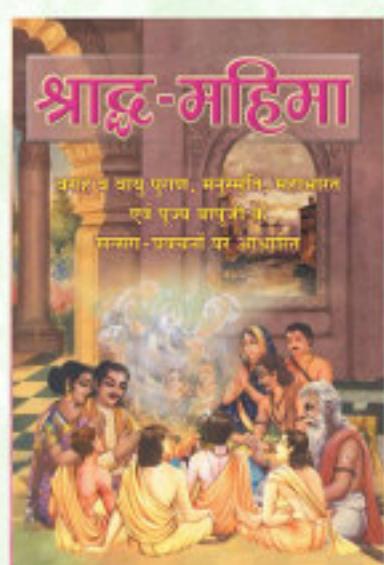
पूज्य बापूजी के सद्गुरु साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज द्वारा पूज्यश्री को लिखा हुआ पत्र

दिनांक : १० मार्च १९६९

प्रिय, प्रिय आशाराम !

विश्वरूप परिवार से खुश-प्रसन्न हो। तुम्हारा पत्र मिला। समाचार जाना।

जब तक शरीर है तब तक सुख-दुःख, ठंडी-गर्मी, लाभ-हानि, मान-अपमान होते रहते हैं। सत्य वस्तु परमात्मा में जो संसार प्रतीत होता है वह आभास है। कठिनाइयाँ तो आती-जाती रहती हैं।

अपने सत्संग-प्रवचन में अत्यधिक सदाचार और वैराग्य की बातें बताना। सांसारिक वस्तुएँ, शरीर इत्यादि हकीकत में विचार-दृष्टि से देखें तो सुंदर नहीं हैं, आनंदमय नहीं हैं, प्रेम करने योग्य नहीं हैं और वे सत्य भी नहीं हैं - ऐसा दृष्टांत देकर साबित करें। जैसे शरीर को देखें तो वह गंदगी और दुःख का थैला है। नाक से रेंट, मुँह से लार, त्वचा से पसीना, गुदा से मल, शिश्नेन्द्रिय से मूत्र बहते रहते हैं। उसी प्रकार कान, आँख से भी गंदगी निकलती रहती है। वायु शरीर में जाते ही दूषित हो जाती है। अन्न-जल सब कफ-पित्त और दूसरी गंदगी में परिणत हो जाते हैं। बीमारी व बुढ़ापे में शरीर को देखें। किसीकी मौत हो जाय तो शरीर को देखें। उसी मृत शरीर को कोई कमरे में चार दिन रखकर बाहर निकाले तो कोई वहाँ खड़ा भी नहीं रह सकता। विचार करके देखने से शरीर की पोल खुल जायेगी। दूसरी वस्तुओं की भी ऐसी ही हालत समझनी चाहिए। आम कितना भी अच्छा हो, ३-४ हफ्ते उसे रखे रहोगे तो सड़ जायेगा, बिगड़ जायेगा। इतनी बदबू आयेगी कि हाथ लगाने में भी घृणा होगी। इस प्रकार के विचार लोगों को अधिक बताना ताकि उनके दिमाग में पड़ी मोह की पर्तें खुल जायें।

नर्मदा तट जाकर १०-१५ दिन रहकर आना। दो बार स्नान करना। अपने आत्मविचार में, वेदांत ग्रंथ के विचारों में निमग्न रहना। विशेष जब रू-बरू मुलाकात होगी तब बतायेंगे।

बस, अब बंद करता हूँ। शिव !

हे भगवान ! सबको सद्बुद्धि दो, शक्ति दो, निरोगता दो। सब अपने-अपने कर्तव्य का पालन करें और सुखी रहें।

हरि ॐ शांति, शांति।

लीलाशाह

विश्व में फैली अशांति को दूर करने का उपाय

(दूरदर्शन पर पूर्व में प्रसारित पूज्य बापूजी का विश्वशांति संदेश)

(गतांक से आगे)

प्रश्न : अशांति कई बार दूसरे कारणों से भी होती है । आदमी अपने मन को शांत रखना चाहता है लेकिन...

पूज्य बापूजी : लेकिन सामनेवाला कुछ करता है।

प्रश्न : जी, उसके व्यवहार की वजह से जो प्रतिक्रिया होती है या उसकी जो मजबूरी है... तब मन अशांत होता है तो ऐसे में क्या करें ?

पूज्य बापूजी : ऐसे में यह करें कि जैसे बाबाजी बैठे थे सेठ के साथ। गाड़ी का सिग्नल दिखाये बिना चालक ने दिशा बदल दी। सेठ बड़े अशांत हो गये कि 'बेवकूफ है ! अभी दुर्घटना हो जाती, यह हो जाता... ।' सेठ दुःखी हो गये। बाबा ने सेठ का हाथ पकड़ा और बोले : ''सेठ ! तुम इनको सुधारने जा रहे हो लेकिन अपने हृदय को बिगाड़कर इनको सुधारोगे तो उन पर असर नहीं होगा। आप सावधान रहिये। गलती तो वह कर रहा है और सजा आप भोग रहे हैं। आप सोचिये कि 'उसकी जगह पर मैं होता और मेरी बुद्धि ऐसी होती तो मैं भी ऐसे ही करता।' आप विचार से, थोड़ा साधन-भजन से अभ्यस्त होकर अपने चित्त का संतुलन बनाये रखिये।''

अशांति का एक कारण और भी है । जो लोग जल्दी-जल्दी भोजन करते हैं वे जरा-जरा बात में क्रुद्ध हो जाते हैं । संत-महापुरुषों को भी देखा गया है, वे क्रुद्ध होते हैं लेकिन जिन्होंने इस युक्ति को पाया है, शांति को पाया है, उन्हें क्रुद्ध होते हुए देखते हैं फिर भी उनके चित्त में वह क्रोध की अग्नि नहीं होती है, व्यथा होती है। व्यथा में और क्रोध में फर्क है। जिनका चित्त बार-बार अशांत हो जाता है, उन सज्जनों को घड़ी सामने रखकर २० से २५ मिनट तक भोजन चबा-चबा के खाना चाहिए और जब भी क्रोध या अशांति का प्रसंग आये तो हाथ की उँगलियाँ ऐसे दबायें कि हथेली पर नाखूनों का स्पर्श हो तो उस क्रोध को, अशांति को अर्थिंग मिल जायेगी। अशांति को मिटाने का अगर संकल्प करें तो मिट सकती है।

प्रश्न : यह आपने जो शांति की बात कही, वह व्यक्तिगत शांति की बात कही तो इसका विश्वशांति से क्या संबंध है ?

पूज्य बापूजी : बिल्कुल सीधा संबंध है। शांति तो सब चाहते हैं । एक व्यक्ति चाहता है तो दूसरा नहीं चाहता है क्या ? व्यक्तियों का समूह तो विश्व है ! व्यक्ति व्यक्तिगत शांति का महत्त्व जानेगा, शांति पाता जायेगा तो विश्व में शांति होने लगेगी। जैसे एक आदमी सिगरेट पीता है तो उसका निकोटीन जहर उस स्थान में उपस्थित लोगों को प्रभावित कर देता है, ऐसे ही एक आदमी सचमुच में शांति के रास्ते चलता है तो उसके आसपास में भी उसकी तरंगें काम करेंगी और जो अच्छी चीज होती है, उसे धीरे-धीरे सब अपनाने लगते हैं। अब अच्छी चीज होते हुए भी नहीं अपनाते हैं तो युग का थोड़ा प्रभाव है, थोड़ी इन्द्रिय-लोलुपता है, थोड़ा संयम बिना की दिनचर्या का प्रभाव है।

साइकिल दूर से आ रही थी, सिपाही ने सीटी मारी : ''ऐ बिना बत्ती के ! रोक, मैं चालान करूँगा।''

साइकिलवाले ने कहा : ''सिपाही ! किनारे हो जाओ, नहीं तो तुम्हारे पर गिरूँगा।''

''क्या मतलब ?''

''साइकिल में बत्ती नहीं है इतनी ही बात नहीं है, ब्रेक भी नहीं हैं। तुम्हारे पर गिरूँगा।''

तो जिनके जीवन में संयम की, समझ की ब्रेक नहीं है वे बेचारे अशांति के शिकार हो जाते हैं और व्यक्ति, व्यक्ति करके ही तो समूह होता है ! तब हम लोग अपनी शांति पायें और सन्मार्ग का प्रचार-प्रसार करें तो विश्वशांति लायी जा सकती है। युग का प्रभाव तो है लेकिन ऐसा कोई युग नहीं है कि शांति न पायी जा सके। अशांत युग में भी शांत लोगों ने शांति पायी है और शांति का प्रचार-प्रसार किया है।

दिमागी कसरत

वर्ग-पहेली में से नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर खोजिये।

(१) कौन-सी संक्रांति में किये गये जप-ध्यान व पुण्यकर्म का एक लाख गुना फल मिलता है ?

(२) एक हजार एकादशियों के व्रत का फल किस एकादशी का व्रत करने से मिलता है ?

(३) चन्द्रग्रहण के समय किया गया पुण्यकर्म, जप-ध्यान, दान आदि कितने गुना फलदायी है ?

(४) किस दिन आँवले के वृक्ष के पास रात्रि-जागरण व परिक्रमा करने से १००० गौदान का फल मिलता है ?

(५) किस संक्रांति के दिन किये गये पुण्यकर्म का ८६००० गुना फल मिलता है ?

(६) वर्षभर की सभी एकादशियों का व्रत करने का फल किस एकादशी के व्रत से मिलता है ?

(उत्तर अगले अंक में प्रकाशित होंगे।)

पु	ई	पौ	न	ज	न	व	पू	ज्य	वि	ष्णु	अ
त्र	म	नि	त्मा	बु	द्ध	वि	म	क	र	ध्व	क्ष
दा	हा	ल्गु	र्ज	द्य	र	का	सा	स	श्वि	र	य
न	त्मा	त्रि	न	ला	का	रा	म	शी	नं	वि	तृ
ए	सु	ज्ये	स्पृ	ल्गु	ए	क	द	का	शु	ठ	ती
वि	क	प	भो	शा	म	का	वे	दी	अ	णु	या
ज	रा	ला	द	ज्ये	ए	वि	द	गु	रो	प	भा
या	त	रा	ख	की	का	का	ज्ये	शी	रा	दी	ई
द	ख	बा	ल	गु	द	के	द	या	नं	सं	दू
श	न	म	नी	ल	ना	व	फा	शी	चै	क्रां	ज
मी	आ	शा	प्रै	ष	ड	शी	ति	सं	क्रां	ति	ढ़
आँ	व	ला	न	व	मी	तु	ल	सी	ज	यं	ती

पछले अंक की वर्ग-पहेली 'बुद्धि की कसरत' के उत्तर

(१) आचार्य तोटक (२) सत्यकाम जाबाल (३) भाई मंझ (४) संत तिलोपा (५) आरुणि (६) संत श्री आशारामजी बापू

(पृष्ठ २० 'माँ का दूध' का शेष) गम्भीर रोगों से उसकी रक्षा होती है। साथ ही हृदयरोग, मधुमेह तथा ऑस्टियोपोरोसिस (हड्डियों की कमजोरी) के खतरे कम हो जाते हैं।

(३) जो महिलाएँ स्तनपान नहीं करातीं या जल्दी बंद कर देती हैं, उनके मानसिक अवसाद से ग्रस्त होने की सम्भावना अधिक होती है।

(४) यह प्राकृतिक ढंग से वजन कम करने और मोटापे से बचने में मदद करता है। इससे प्रसव के बाद पेट का लटकाव भी नहीं होता।

लंदन के 'ग्रेट ओरमंड स्ट्रीट' अस्पताल के शोधकर्ताओं ने १३ से १६ वर्ष तक के २१६ बच्चों पर एक सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण में उन बच्चों को शामिल किया गया था, जो समय से पहले पैदा हो गये थे परंतु उन्हें माँ के दूध का भरपूर लाभ मिला था। विशेषज्ञ यह देखकर दंग रह गये कि समय से पहले जन्म लेने पर भी उन बच्चों को अभी तक किसी भी खतरनाक रोग का सामना नहीं करना पड़ा क्योंकि उन्हें पर्याप्त मात्रा में माँ के दूध के द्वारा रोगों का प्रतिकार करने की शक्ति मिल गयी थी।

शिशु एक-डेढ़ साल का होने तक उसे दिन में ५-६ बार स्तनपान कराना शिशु के पूर्ण मानसिक व शारीरिक विकास के लिए आवश्यक है। यदि बच्चा कभी बीमार हो तो भी माँ अपना दूध उसे जरूर पिलाये। माँ का दूध बच्चे के लिए वास्तव में कवच-कुंडल ही है। (क्रमशः)

झूलासन

लाभ : (१) कमर पतली और सीना चौड़ा होता है।

(२) कंधों और भुजाओं में बल बढ़ता है तथा कलाइयाँ मजबूत हो जाती हैं।

(३) हृदय को बल मिलता है।

(४) इसके अभ्यासी को अत्यधिक परिश्रम करने पर भी थकान प्रतीत नहीं होती। उसकी पाचन-क्रिया भी ठीक होने लगती है।

(५) इससे अधिक मात्रा में गंदी वायु बाहर निकल जाती है और शरीर के भीतर शुद्ध प्राणवायु भलीभाँति प्रविष्ट होने लगती है, जिससे सम्पूर्ण शरीर को अद्‌भुत लाभ होता है।

विधि : आसन बिछाकर पद्मासन में बैठ जायें। दोनों हाथों की हथेलियों को जमीन पर रखकर समस्त शरीर को ऊपर उठा लें और झूले के समान आगे-पीछे झूलें।

वैसे यह आसन सभीके लिए उपयोगी है परंतु १६ वर्ष से कम आयुवालों के लिए अत्यधिक उपयोगी है।

******

वह नित्य प्राप्त है प्रेम सुधा

मैं नित्य मुक्त सच्चिदानंद,
यह भान गुरुकृपा से ही होता।
जिससे भव भ्रांति मिटा करती,
वह ज्ञान गुरुकृपा से ही होता॥
जिससे निज दोष दिखा करते,
पापों अपराधों से डरते।
उस सद् विवेक का मानव में,
सम्मान गुरुकृपा से ही होता॥
अच्छे दिन बीते जाते हैं,
गुरुजन सब विधि समझाते हैं।
भोग-स्थल से योग-स्थल में,
प्रस्थान गुरुकृपा से ही होता॥
शीतलता जिससे आती है,
सारी अतृप्ति मिट जाती है।
वह नित्य प्राप्त है प्रेम सुधा,
पर पान गुरुकृपा से ही होता॥
यद्यपि हैं सभी सुलभ साधन,
सोचते यही हैं मन ही मन।
जिससे कि पथिक प्रभुमय होवे,
वह ध्यान गुरुकृपा से ही होता॥

– पथिकजी

(पृष्ठ ११ 'जीव और शिव' का शेष)

छो गूंगो आहे ? न न. बोड़ो आहे ? न.
चरियो आहे ? ज़रा बि न. पोइ छो ?
(क्यों गूँगे हैं ? ना। बहरे हैं ? ना। पागल हैं ?
ज़रा भी नहीं। फिर क्यों ?)
बहारी बाग़ जे वांगुर रहे दिलशाद थो ज्ञानी.
रही लोदुनि में लोदुनि खां रहे आज़ाद थो ज्ञानी.

(बहारों के बाग की तरह ज्ञानी दिलशाद रहते हैं, झंझावात में रहते हुए भी उनसे आजाद रहते हैं अर्थात् उतार-चढ़ाव में दोलायमान नहीं होते।)

झूलों में रहते हुए, संसार के आघात और प्रत्याघातों में रहते हुए भी उनके चित्त में कभी भी क्षोभ नहीं होता क्योंकि वे समझते हैं :

यदिदं मनसा वाचा चक्षुर्भ्यां श्रवणादिभिः।
नश्वरं गृह्यमाणं च विद्धि मायामनोमयम्॥

'इस जगत में जो कुछ मन से सोचा, वाणी से कहा, आँखों से देखा जाता है और श्रवण आदि इन्द्रियों से अनुभव किया जाता है, वह सब नाशवान है, सपने की तरह मन का विलास है। इसलिए मायामात्र है, मिथ्या है - ऐसा समझ लो।'

(श्रीमद्‌भागवत : ११.७.७)

२ साल से क्यों हैं बापूजी जेल में ?

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू अथक मेहनत करके देश को, देशवासियों को उन्नत कर रहे हैं। बापूजी सच्चाई से मानवता व संस्कृति की सेवा कर रहे हैं। यही कारण है कि बापूजी के विरुद्ध ईसाई मिशनरियाँ तथा विदेशी ताकतें मीडिया को मोहरा बनाकर षड्यंत्र करती रहती हैं। थोड़ा विस्तार से जानते हैं :

✲ पूज्य बापूजी सबको मंत्र-चिकित्सा, ध्यान, प्राणायाम, सादा रहन-सहन, स्वदेशी वस्तुएँ एवं स्वदेशी आयुर्वेदिक चिकित्सा को अपनाने की सीख देते हैं, फूँकने-थूकनेवाले 'हैप्पी बर्थ-डे' की जगह भारतीय पद्धति से जन्मदिवस मनाने की प्रेरणा देते हैं। इससे विदेशी कम्पनियों का प्रतिवर्ष कई हजार करोड़ का नुकसान हो रहा है। ✲ बापूजी के सत्संग से लोगों में सनातन धर्म व भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था बढ़ने से देशविरोधी तत्त्वों को तकलीफ होती है। ✲ बापूजी धर्मांतरणवालों के लिए भारी रुकावट हैं इसलिए वे लोग सत्ता की सहायता से बापूजी और हिन्दू संतों को हर प्रकार से झूठे इल्जामों में फँसा रहे हैं। बापूजी आदिवासियों में अन्न, वस्त्र, बर्तन, गर्म भोजन के डिब्बे, कम्बल, दवाएँ, तेल आदि जीवनोपयोगी सामग्रियाँ बाँटते रहे हैं। इससे धर्मांतरण करनेवालों का बोरिया-बिस्तर बँध जाता है। ✲ कई मीडियावाले पैसों के लिए तो कई टीआरपी बढ़ाने के लिए कुछ-का-कुछ दिखाते रहते हैं। ✲ बापूजी की प्रेरणा से चल रहे 'युवाधन सुरक्षा अभियान' तथा गुरुकुलों व बाल संस्कार केन्द्रों के असाधारण प्रतिभासम्पन्न विद्यार्थियों द्वारा ओजस्वी-तेजस्वी भारत का निर्माण हो रहा है। ✲ बापूजी के सत्संग एवं उनकी प्रेरणा से चल रहे 'व्यसनमुक्ति अभियान' से करोड़ों लोगों की शराब, सिगरेट, गुटका आदि व्यसन छूटते हैं। साथ ही लोग अश्लील सामग्रियों से भी बचते हैं। इससे विदेशी कम्पनियों का खरबों रुपये का नुकसान होता है।

इनके अलावा और भी कई कारण हैं जिनसे कभी ईसाई मिशनरियाँ, कभी विदेशी कम्पनियाँ तो कभी कोई और, मीडिया को मोहरा बनाकर हिन्दू संस्कृति व बापूजी जैसे संतों के विरुद्ध षड्यंत्र करते रहते हैं।

– श्री पी. दैवमुत्तु, सम्पादक, 'हिन्दू वॉइस' मासिक पत्रिका
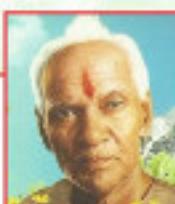
हिन्दू धर्म को मिटाने का खुला षड्यंत्र

– सूझबूझ के धनी पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, संस्थापक, अखिल विश्व गायत्री परिवार

''भारत में पादरियों का धर्म-प्रचार हिन्दू धर्म को मिटाने का खुला षड्यंत्र है, जो कि एक लम्बे अरसे से चला आ रहा है। हिन्दुओं का तो यह धार्मिक कर्तव्य है कि वे ईसाइयों के षड्यंत्र से आत्मरक्षा में अपना तन-मन-धन लगा दें और आज जो हिन्दुओं को लपेटती हुई ईसाइयत की लपट परोक्ष रूप से उनकी ओर बढ़ रही है, उसे यहीं पर बुझा दें। ऐसा करने से ही भारत में धर्म-निरपेक्षता, धार्मिक बंधुत्व तथा सच्चे लोकतंत्र की रक्षा हो सकेगी अन्यथा आजादी को पुनः खतरे की सम्भावना हो सकती है।'' **(संदर्भ : 'अखंड ज्योति' पत्रिका, जनवरी १९६७)**

जमानत कब मिलेगी ?

– श्री सुरेश चव्हाणके, चेयरमैन, सुदर्शन न्यूज चैनल

आखिर २४ महीने होने के बाद भी आशाराम बापू को जमानत क्यों नहीं मिली ? इस देश में पिछले २४ महीने में कितनी ही ऐसी घटनाएँ हुईं, जिनमें लोगों पर आरोप हुए, वे जेल में गये और उसके बाद बाहर आये । पौने दो लाख करोड़ रुपये के 2G स्पेक्ट्रम घोटाले के प्रमुख आरोपी से लेकर कई बड़े-बड़े आरोपी जेल के बाहर हैं । उनमें से कुछ लोग चुनाव भी लड़ चुके हैं । ७० हजार करोड़ रुपये के घोटाले का आरोप जिनके ऊपर है या जिन पर कॉमनवेल्थ खेलों के घोटाले का आरोप है, वे भी बाहर हैं । और 'तहलका' का सम्पादक तरुण तेजपाल भी बाहर है लेकिन निर्दोष आशाराम बापू अभी भी अंदर हैं, २४ महीने हो गये हैं !

किसीको २४ महीने तक बगैर बेल आप कैसे रख सकते हैं ? लोग इसको लेकर जनाक्रोश के रूप में अपनी प्रतिक्रियाएँ दे रहे हैं और कुछ समय पहले 'अखिल भारतीय नारी रक्षा मंच' ने दिल्ली में हजारों की संख्या में एकत्र होकर बड़ा मार्च भी किया था ।

हिन्दू संतों के ऊपर हमेशा ही अन्याय होता रहा है । उन्होंने जब बहुत बड़े-बड़े कार्य किये, तब यह नहीं कहा गया कि यह कार्य विश्वशांति के लिए हुआ, समाज-कल्याण के लिए हुआ लेकिन जब कभी उनके ऊपर कोई छोटा-सा आरोप लग जाता है तो उस आरोप की कितनी हवाएँ बनायी जाती हैं !

आज इस दुनिया की बेईमानी का, दुष्कृत्यों का सबसे बड़ा शत्रु अगर कोई है तो बापूजी हैं । इसलिए उनके ऊपर सबसे ज्यादा हमले (षड्यंत्र) हो रहे हैं ।

इस अत्याचार के खिलाफ अगर कोई बोलेगा नहीं तो मीडिया एकतरफा हमला करके अपने मंसूबे में सफल हो जायेगा । हम तो इसके खिलाफ बोलेंगे क्योंकि यह अशोभनीय है, असहनीय है और अब अति हो गयी है ।

जो पिछले १२०० सालों में सम्भव नहीं हुआ, वह आनेवाले १० सालों में दिख रहा है । इन १० सालों में इस देश को गुलाम बनने से रोकनेवाली जो सबसे बड़ी शक्ति है, वह आशारामजी बापू हैं । इसी कारण ये सबसे ज्यादा निशाने पर हैं ।

मैं दावा कर सकता हूँ कि अगर यह लड़ाई आपने नहीं जीती तो साधु-संतों के बाद सामाजिक कार्यकर्ता, जो स्वदेश और देश-धर्म की बात करता है, उसका नम्बर लगना तय है । आज बापूजी निशाने पर हैं, कल आप और हम हैं ।

बापूजी के बाहर आने के बाद यह लड़ाई खत्म हुई, ऐसा नहीं है । अब यह लड़ाई शुरू हो चुकी है और यह लड़ाई तब तक जारी रहनी चाहिए, जब तक इस देश के खिलाफ षड्यंत्र खत्म नहीं होता ।

बापू को जल्द-से-जल्द इंसाफ मिले

– सुदर्शन न्यूज

आशाराम बापू हिन्दू धर्म के बड़े संत हैं इसलिए उनको निशाना बनाकर हिन्दू धर्म का पूरी दुनिया में कुप्रचार किया जा रहा है । तमाम साजिशों के बावजूद आशारामजी बापू के भक्तों का भरोसा नहीं डिगा । उनकी नजर में बापू आज भी महागुरु का दर्जा रखते हैं । बापू के खिलाफ साजिश रचनेवालों ने कई मीडिया हाउसों को एक तरह से खरीद लिया है । मीडिया के दबाव में साजिश रचनेवाले लोगों की पूरी तरह पड़ताल नहीं की जा सकी ।

मीडिया ट्रायल बंद हो ।

बुजुर्ग बापू को जल्द-से-जल्द इंसाफ दिलाना जरूरी है ।

राष्ट्र-विखंडन का
कूटनीतिक षड्यंत्र

– यूरी एक्जेन्ड्रोविच बेज्मेनोव, सोवियत रूस की जासूसी एजेंसी केजीबी के पूर्व प्रचार एजेंट व विशेषज्ञ

किसी देश की सैद्धांतिक विचारधारा का नष्टीकरण यह एक खुल्लम-खुल्ला तरीका है जिसके जरिये किसी भी देश, जाति, धर्म के सिद्धांत, विचारधारा और व्यवस्था का नाश करके दूसरे देश की विचारधारा और व्यवस्था स्थापित की जाती है।

हम (विदेशी ताकतें) निशाने पर लिये देश के हर व्यक्ति का दिमाग बदलकर ऐसा कर देते हैं कि वे सच्चाई को समझ-बूझ ही न पायें। चाहे आप उनके सामने सारी सच्चाई खोलकर रख दें फिर भी वे अपनी, अपने परिवार, जाति, धर्म तथा अपने देश की रक्षा न कर पायें। यह एक बहुत बड़ा ब्रेनवॉशिंग या पागल या स्थायी मूर्ख बनाने का सीधा तरीका है, जिससे किसी भी देश की पूरी जनसंख्या की विचारधारा और व्यवहार को बदला जाता है। यह बहुत चतुराई से धीरे-धीरे करना होता है ताकि देश की जनता को इसका बिल्कुल भी आभास न हो।

इस तरीके के चार चरण हैं : (१) Demoralisation or corrupting morals (स्वाभिमान या मनोबल को नष्ट करना) (२) Destabilisation (अस्थिरीकरण यानी देश की अर्थ-व्यवस्था, विदेशी संबंध और रक्षा-प्रणाली को अस्थिर करना) (३) Crisis (संकटावस्था) (४) Normalisation (सत्ता और व्यवस्था परिवर्तन तथा सामाजिक व्यवस्था को तहस-नहस करना)

अभी भारत देश में स्वाभिमान और मनोबल को नष्ट करने का काम पूरा हो चुका है। यदि आप अभी भी इसका इलाज करना चाहते हैं तो आपको एक नयी पीढ़ी को स्वाभिमानी, देशप्रेमी और उत्साही बनाना होगा।

(यूरी एक्जेन्ड्रोविच बेज्मेनोव ऐसे व्यक्ति हैं जो विदेशी ताकतों की कूटनीति से तंग आ के जान का जोखिम उठाकर उनके चंगुल से छूट निकले और जिन्होंने लोक-जागरण का बिगुल फूँका।

आज भारत के हितचिंतकों व देशप्रेमी जनता को जागने तथा सावधान होने की जरूरत है। यह षड्यंत्र हमारे देश में बहुत तेजी से चल रहा है। भारत के युवाओं की विचारधारा को दैवी, सबल व भारतीय संस्कारों से ओत-प्रोत बनाने का काम जो संत कर रहे हैं, आज उन्हींके चरित्र पर लांछन लगाकर विदेशी कूटनीतिक षड्यंत्र द्वारा भारत की युवा पीढ़ी को खोखला व गुलाम बनाया जा रहा है। अतः हम सभीको सजग व एकजुट हो के इस षड्यंत्र को विफल करना चाहिए। यह हर एक भारतीय का कर्तव्य है। इन विदेशी ताकतों को अपने देश से तुरंत ही उखाड़ के फेंक देना चाहिए।

आज भारत में संस्कृति के आधारस्तम्भ निर्दोष संतों पर अत्याचार किये जा रहे हैं, फिर भी हम सब जाग नहीं रहे हैं। गुमराह करनेवाले झूठी खबरें दिखाये जा रहे हैं, छापे जा रहे हैं। उपरोक्त व्यापक योजना के तहत जिन हिन्दुओं का ब्रेनवॉश हो चुका है, जिनका डिमोरलाइजेशन हो चुका है उन्हींको अधिकांश मीडियावालों द्वारा समाज के सामने ला-लाकर पेश किया जा रहा है और दूसरे लोगों को भी निशाना बनाने की कोशिश की जा रही है।

यूरी एक्जेन्ड्रोविच बेज्मेनोव के वक्तव्य के विडियो को आप इस लिंक पर देख सकते हैं : https://goo.gl/q8u09B इसका प्रचार-प्रसार करके देशवासियों को इस देश को विखंडित करनेवाली विदेशी ताकतों की कूटनीति से अवगत कराना भी राष्ट्रसेवा का उत्तम कार्य है।

– वरिष्ठ पत्रकार श्री अरुण रामतीर्थकर)

राष्ट्रपतियों के उद्गार

''भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने हेतु वैश्विक स्तर पर प्रतिवर्ष १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन' अभियान चलाया जा रहा है ।'' **– राष्ट्रपति के प्रेस सचिव वेणु राजामणि**

''पूज्य बापूजी एवं उनके आश्रम द्वारा गरीबों और पिछड़े लोगों को ऊपर उठाने के कार्य चलाये जा रहे हैं, मुझे प्रसन्नता है । मानव-कल्याण के लिए, विशेषतः प्रेम व भाईचारे के संदेश के माध्यम से किये जा रहे विभिन्न आध्यात्मिक एवं मानवीय प्रयास समाज की उन्नति के लिए सराहनीय हैं।'' **– डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, तत्कालीन राष्ट्रपति**

''यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि 'संत श्री आशारामजी आश्रम न्यास' जन-जन में शांति, अहिंसा और भ्रातृत्व का संदेश पहुँचाने के लिए देशभर में सत्संग का आयोजन कर रहा है। उसके सराहनीय प्रयासों की सफलता के लिए मैं बधाई देता हूँ।''

– श्री के.आर. नारायणन्, तत्कालीन राष्ट्रपति

साथ ही **तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा** व अनेक राज्यपालों, जैसे - **श्री ई.एस.एल. नरसिम्हन (आं.प्र.), श्री कप्तानसिंह सोलंकी (हरि.), श्रीमती उर्मिला सिंह (हि.प्र.)** आदि तथा विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों, देश के केन्द्रीय मंत्रियों आदि ने भी पूज्य बापूजी के सत्संग एवं दैवी कार्यों की प्रशंसा की है।

विश्वभर से आयी प्रतिक्रियाओं में झलक रहा है जनाक्रोश

''बापूजी के साथ इंसाफ क्यों नहीं हो रहा है ? मैं भी एक महिला हूँ और २० साल से बापूजी से जुड़ी हूँ। उनके सत्संग-सान्निध्य से कितना लाभ हुआ - यह मेरा अनुभव है। मेरे जैसी लाखों महिलाएँ कह रही हैं कि बापूजी निर्दोष हैं तो हमारी बात क्यों नहीं सुनी जा रही है ? यह सरासर अन्याय है। बापूजी को बेल मिलनी ही चाहिए, नहीं तो लोगों का भारत की न्याय-व्यवस्था से विश्वास ही उठ जायेगा।'' **– श्रीमती जलपा मित्रा, अध्यापिका, बोस्टन (यूएसए)**

''सरकार से हमारी माँग है कि देश में निष्पक्ष न्याय-व्यवस्था हो । आरोप सिद्ध होने के बावजूद कुछ लोग खुले घूम रहे हैं पर झूठे केस में फँसाये गये बापूजी को आरोप सिद्ध न होने एवं कष्टदायी बीमारी के बावजूद भी बेल नहीं मिल रही है और उन्हें और भी फँसाने की पूरी साजिश हो रही है। क्या इससे लोगों के मन में न्याय-व्यवस्था में विश्वास उपजेगा ?'' **– श्री विपिन तिवारी, सीनियर सॉफ्टवेयर इंजीनियर, दुबई**

''बापूजी ने मुझे ब्रह्मचर्य-व्रत की शिक्षा दी । आज मैं २० साल से पत्नी के साथ रहता हूँ पर मेरा ब्रह्मचर्य व्रत भंग नहीं हुआ है।

पुलिसवालों से और जिन्होंने आरोप लगाये हैं उनसे मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या गलत काम करने के लिए कोई किसी दूसरे के घर का चयन करेगा ? क्या वह उसके माता-पिता को बुलायेगा, उनको अपनी छाती पर बिठायेगा और उसके बाद उस लड़की को बुलायेगा ? यह तो पूरी साजिश है !''

– श्री धर्मेन्द्र त्रिपाठी, पीसीएफ ऑफिसर, इलाहाबाद (उ.प्र.)

भक्ति से लाभ-ही-लाभ लेकिन संत-निंदा से...

पूज्य बापूजी से दीक्षा लेने से पहले मैं बहुत गरीब था, बड़ी कठिनाई से गुजारा होता था। घर की समस्याओं व आर्थिक तंगी से परेशान होकर मैंने सपरिवार आत्महत्या करने का सोच लिया था।

एक बार पूज्य बापूजी के सत्संग में गया। वहाँ बापूजी बोले कि ''सोमवती अमावस्या को तुलसी की १०८ परिक्रमा करने से दरिद्रता दूर होती है।'' पूज्यश्री ने गो-धूलि व बड़ बादशाह (पूज्य बापूजी द्वारा शक्तिपात किया हुआ वटवृक्ष) की मिट्टी के पैकेट बँटवाये और उसकी महिमा बतायी। मैं पैकेट घर ले गया और प्रतिदिन जप-पाठ करने से पहले उससे तिलक करता तथा सोमवती अमावस्या को तुलसी की १०८ परिक्रमा की। मैंने श्रद्धा से गुरु की बात मानी तो घर से दरिद्रता भाग गयी और सम्पन्नता आ गयी। अगर बापूजी का सत्संग-सहारा न मिला होता तो मैं आत्महत्या का अनर्थ कर लेता ! आत्महत्या करनेवाले कैसे-कैसे अशांत हो के दुःख भोगते हैं ! आत्महत्या महापाप है, महाकायरता है, महामूर्खता है ! यह अभी पता चला।

मेरे गाँव में एक आदमी बापूजी की निंदा करता था। कुछ दिन बाद वह अशांत होने लगा। निंदा का पाप ऐसा चढ़ा कि उसे हार्ट-अटैक आया और वह मर गया। एक दूसरा लड़का था, उसकी दुकान खूब चलती थी। उसने बापूजी की निंदा की तो आज वह कर्ज में डूब गया, दुकान बंद हो गयी और मकान बिकने की नौबत आ गयी है। वह परिवारसहित गाँव छोड़कर भाग गया। मैंने श्रद्धा की तो मुझे लाभ हुआ और जिसने संत-निंदा की उसे दंड मिला।

प्रकृति के विधान के अनुसार निंदा का फल तो सबको भोगना ही पड़ता है, किसीको जल्दी तो किसीको देर से। अतः जो लोग बिना सच्चाई जाने झूठी खबरों के आधार पर निर्दोष लोगों की निंदा करते-सुनते हैं, वे सावधान हो जायें !

– रामजी शर्मा, ग्राम थरेट, दतिया (म.प्र.), सचल दूरभाष : ०८२२४०३११३७

दीक्षा से भाग्य बदला

''मुझे पूज्य बापूजी से सारस्वत्य मंत्र की दीक्षा मिली। मंत्रजप के प्रभाव से वर्ष २०१४ में १०वीं (सीबीएसई) की परीक्षा में मुझे १०/१० सीजीपीए अंक मिले हैं और पुरस्कार के रूप में ५०,००० रुपये की छात्रवृत्ति मिली।''

– रश्मिता वाधवा, गुड़गाँव (हरियाणा)

''पूज्य बापूजी से सारस्वत्य मंत्र की दीक्षा लेने के बाद जप, ध्यान आदि से मेरी स्मरणशक्ति में खूब वृद्धि हुई। इससे २०१४ में १२वीं की परीक्षा में मैंने चंडीगढ़, पंचकुला, मोहाली आदि क्षेत्रों में चौथा स्थान प्राप्त किया है।''

– महिमा दुग्गल, चंडीगढ़

''पहले मैं पढ़ने में बहुत कमजोर थी। बापूजी से प्राप्त सारस्वत्य मंत्र के नियमित जप से मुझे १०वीं में ७८% और १२वीं में ८५% अंकों के साथ विद्यालय में द्वितीय स्थान मिला। फिर इंजीनियरिंग कॉलेज में मैं हर साल अपने विषय की टॉपर रही। मई २०१० में मुझे कॉलेज टॉपर की ख्याति मिली।''

– माधुरी सूरी, बेंगलुरु

''मैं 'कौन बनेगा करोड़पति' शो में 'हॉट सीट' के लिए चुना गया। घर पर माँ श्री आशारामायणजी के १०८ पाठ कर रही थी। १०८ पाठ पूरे होते ही मैं २५ लाख रुपये जीत चुका था और हम पर अभिनंदन की वर्षा होने लगी।''

– विनय शर्मा, पठानकोट

स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन का राजमार्ग

जैविक घड़ी पर आधारित दिनचर्या

प्रातः ३ से ५
जीवनीशक्ति विशेष रूप से : फेफड़ों में

गुनगुना पानी पीकर खुली हवा में घूमें व प्राणायाम करें। आप बलवान, बुद्धिमान व उत्साही बनेंगे।

सुबह ५ से ७
जीवनीशक्ति : बड़ी आँत में

प्रातः जागरण से सुबह ७ बजे के बीच मल-त्याग एवं स्नान कर लें। सुबह ७ बजे के बाद मल-त्याग से अनेक बीमारियाँ होती हैं।

सुबह ७ से ९
जीवनीशक्ति : आमाशय में

दूध या फलों का रस या कोई पेय पदार्थ ले सकते हैं। (भोजन के २ घंटे पूर्व)

सुबह ९ से ११
अग्न्याशय व प्लीहा में

यह समय भोजन के लिए उपयुक्त है।

दोपहर ११ से १
जीवनीशक्ति : हृदय में

दोपहर १२ बजे के आसपास जप-ध्यान करें। भोजन वर्जित।

दोपहर १ से ३
जीवनीशक्ति : छोटी आँत में

भोजन के करीब २ घंटे बाद पानी पियें। इस समय भोजन करने या सोने से शरीर रोगी व दुर्बल हो जाता है।

दोपहर ३ से ५
जीवनीशक्ति : मूत्राशय में

२-४ घंटे पहले पिये पानी से इस समय मूत्र-त्याग की प्रवृत्ति होगी।

शाम ५ से ७
जीवनीशक्ति : गुर्दे में

हलका भोजन कर लें। तीन घंटे बाद दूध पी सकते हैं।

रात्रि ७ से ९
जीवनीशक्ति : मस्तिष्क में

अध्ययन करें। पढ़ा हुआ जल्दी याद रहेगा।

रात्रि ९ से ११
जीवनीशक्ति : मेरुरज्जु में

इस समय की नींद सर्वाधिक विश्रांति देती है। जागरण शरीर व बुद्धि को थका देता है।

रात्रि ११ से १
जीवनीशक्ति : पित्ताशय में

नयी कोशिकाएँ बनती हैं। इस समय जागरण से अनेक रोग होते हैं व बुढ़ापा जल्दी आता है।

रात्रि १ से ३
जीवनीशक्ति : यकृत में

जागरण से लीवर व पाचन-तंत्र बिगड़ता है।

ऋषियों व आयुर्वेदाचार्यों ने बिना भूख लगे भोजन करना वर्जित बताया है। अतः प्रातः एवं शाम के भोजन की मात्रा ऐसी रखें, जिससे ऊपर बताये भोजन के समय में खुलकर भूख लगे।

पूज्य बापूजी देते स्वास्थ्य की कुंजियाँ

कैंसर का अनुभूत उपाय

कैंसर के रोगी को १० ग्राम तुलसी का रस तथा १० ग्राम शहद मिलाकर सुबह-दोपहर-शाम देने से अथवा १० ग्राम तुलसी का रस एवं ५० ग्राम ताजा दही (खट्टा नहीं) देने से उसे राहत मिलती है। एक-एक घंटे के अंतर से दो-दो तुलसी के पत्ते भी मुँह में रखकर चूसते रहें।

सुबह-दोपहर-शाम दही व तुलसी का रस कैंसर मिटा देता है (सूर्यास्त के बाद दही नहीं खाना चाहिए)। 'वज्र रसायन' की आधी गोली दिन में २ बार लें। नींबू के छिलके चाकू से निकाल के उनके छोटे-छोटे टुकड़े कर लें। अथवा नींबू को फ्रीजर में रखें और सख्त हो जाने पर उसके छिलके को कद्दूकश कर लें। उन टुकड़ों या कद्दूकश किये छिलकों को दाल, सब्जी, सलाद, सूप आदि खाद्य पदार्थों में मिला के नियमित सेवन करने से कैंसर रोग में लाभ होता है। १ दिन के लिए १ नींबू का छिलका पर्याप्त है।

हृदयाघात (हार्ट-अटैक) का अचूक उपाय

एक चुटकी दालचीनी के चूर्ण को एक कप दूध में समभाग पानी मिलाकर तब तक उबालें, जब तक पानी वाष्पीभूत न हो जाय। फिर मिश्री मिलाकर पी लें, इससे हृदयाघात (हार्ट-अटैक) से सुरक्षा होगी और नाड़ियों के अवरोध (ब्लॉकेज) भी खुल जायेंगे।

अनिद्रा से पायें छुटकारा

१० मिनट विधिवत् शवासन करने से या जीभ के अग्रभाग को दाँतों से थोड़ा दबाकर १० मिनट तक ज्ञान मुद्रा लगा के बैठने से शारीरिक-मानसिक तनाव व अनिद्रा आदि की बीमारी दूर होती है।

गतांक की ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी के उत्तर

(१) जन्माष्टमी (२) मन, शरीर (३) संस्कृत (४) अशांति

सुखी, स्वस्थ रहने के सरल उपाय

❋ बच्चों को पढ़ा हुआ याद नहीं रहता है तो प्रतिदिन सूर्य को अर्घ्य दें, ५-७ तुलसी के पत्ते खाकर आधा गिलास पानी पियें, जीभ तालू में लगा के पढ़ें, कमर सीधी रख के बैठें, बुद्धि व मेधाशक्तिवर्धक प्रयोग आदि करें।

❋ धूप में नंगे सिर नहीं टहलना चाहिए। इससे आँख, नाक, कान व ज्ञानतंतुओं (स्मरणशक्ति) आदि की कार्यक्षमता को बहुत नुकसान होता है।

❋ रात को सिर पूर्व या दक्षिण की तरफ करके ही सोना चाहिए अन्यथा सिरदर्द, तनाव, चिंता पीछा नहीं छोड़ेंगे।

❋ घर में लड़ाई-झगड़े ज्यादा होते हों तो 'हे प्रभु ! आनंददाता...' प्रार्थना पूरे परिवारसहित एक साथ बैठकर करें। (देखें आश्रम की पुस्तक 'हम भारत के लाल हैं', पृष्ठ ५७)

बापू के दुश्मन करा रहे गवाहों की हत्या

दैनिक जागरण, २६ जुलाई २०१५। कृपाल सिंह मर्डर में आरोपी नारायण पांडे ने पुलिस के दावे को सिरे से खारिज कर दिया। उसने बताया कि आशाराम बापू के जेल से बाहर आने के दिन बने थे। ठीक उससे पूर्व कृपाल की हत्या कर दी गयी। इससे पूर्व भी जमानत की स्थिति बनने पर एक गवाह को निशाना बनाया गया था। जाहिर है बापू का कोई दुश्मन मौके का फायदा उठा रहा है।

करोड़ों महिलाओं को न्याय कौन देगा ?

– श्रीमती रूपाली दुबे, रिटायर्ड लेफ्टिनेंट ऑफिसर, इंडियन नेवी, अध्यक्षा, अखिल भारतीय नारी रक्षा मंच

मैं अपनी एनजीओ की तरफ से करोड़ों महिलाओं की वेदना समाज व सरकार के सामने रख रही हूँ। एक लड़की द्वारा झूठा आरोप लगाने पर पूज्य संत श्री आशारामजी बापू को कारावास दिया जा सकता है तो यहाँ (दिल्ली में) ५० हजार से अधिक संख्या में इकट्ठी हुई ये जो महिलाएँ कह रही हैं कि 'बापूजी निर्दोष हैं', इनकी बात भी तो सुननी चाहिए सरकार को !

महिलाओं की सुरक्षा के लिए पॉक्सो कानून बनाया लेकिन जब कानून बनाते हैं तो यह भी ध्यान रखना चाहिए कि उनका क्रियान्वयन भी पूर्ण प्रामाणिक हो। जो हमारे देश की बच्चियों को, हम बहनों को संस्कार देते हैं, हमारा चरित्रबल बढ़ाते हैं, जिनकी उपस्थिति मात्र से हमारे जीवन में संयम और सदाचार आ जाता है, उन बापूजी को पॉक्सो कानून का मोहरा बनाया गया, क्या यह भयावह नहीं है ?

पूज्य बापूजी ने सितम्बर १९९३ में 'विश्व धर्म संसद' में देश का सफल प्रतिनिधित्व किया था और सनातन संस्कृति का डंका बजाया था। जिन संत को लाखों-करोड़ों लोग मानते हैं, आदर देते हैं, उन संत को झूठे आरोप लगाकर पॉक्सो के तहत कैसे अंदर कर दिया गया ?

अभी तक की जितनी कानूनी कार्यवाही हुई है, उसमें बापूजी पूरी तरह निर्दोष पाये गये हैं फिर भी उनको जमानत क्यों नहीं मिल रही है ? सारा विश्व देख रहा है कि जिन संत ने देश को संस्कार दिये, देश का प्रतिनिधित्व किया, उन संत को ही अंदर कर दिया गया ! बापूजी को आदरसहित बाहर लाया जाय और उनसे माफी माँगी जाय तभी भारत की सच्ची प्रगति होगी क्योंकि नैतिक प्रगति के मूल में है आध्यात्मिक प्रगति।

पूज्य बापूजी के समर्थन में हिन्दू यूनाइटेड फ्रंट

यह सारा ड्रामा मीडिया का है

– श्री मुरारीलालजी, राष्ट्रीय अध्यक्ष, हिन्दू यूनाइटेड फ्रंट

संत आशारामजी बापू को ईसाइयों द्वारा घेरा जा रहा है, बदनाम किया जा रहा है। किसीको बदनाम करना हो तो उसको दुष्चरित्र साबित कर दो। यही हथकंडा इन्होंने शुरू किया है। इस समय देश में मुद्दा है कि हिन्दू साधु-संतों को प्रताड़ित करो, अपमानित करो, दुष्चरित्र साबित करो। अगर साबित नहीं भी होते तो ५-६ महीने राग अलापते रहो क्योंकि आम जनता टीवी देखती है और इसमें विडियो होता है, ऑडियो होता है, यह सीधे दिमाग में रजिस्ट्रेशन रखता है।

तेजपाल का केस हो गया। वह मीडिया का आदमी है। उस पर मीडिया इतना नहीं चिल्लाया, उसको कभी इन्होंने नहीं कहा कि यह कंस है, यह रावण है, यह पापी है, दुराचारी है लेकिन जितनी भी उपमाएँ शब्दकोश में थीं उन्होंने पूरा उपयोग किया था जब हमारे आशारामजी बापू को गिरफ्तार किया गया, उनकी दलील ही नहीं सुनी जा रही। यह सारा ड्रामा मीडिया का है।

'ऋषि प्रसाद' मैंने पढ़ी है। अद्भुत पत्रिका है, अद्भुत विचार उसमें हैं ! और बापूजी के एक-दो सत्संग भी सुने थे। तकरीबन ५ वर्ष पहले इन्होंने अपने अनुयायियों को स्वयं कहा था कि 'कुछ समय के बाद मेरे ऊपर आरोप लगाये जायेंगे, अत्याचार होंगे।' मैंने खुद सुना हुआ है। ये संत आपको अनेक वर्ष पहले बता देते हैं कि मेरे साथ यह होनेवाला है और बिल्कुल वही हो रहा है।

मीडिया ट्रायल द्वारा पहले शंकराचार्य आदि संतों का दुष्प्रचार किया गया लेकिन आज वे निर्दोष साबित हो गये। वही बात अब संत आशारामजी के साथ दोहरायी जा रही है। 'हिन्दू यूनाइटेड फ्रंट' की तरफ से मैं यह माँग करता हूँ कि मीडिया ट्रायल बंद किया जाना चाहिए।

एक ऐसी चीज है जिसका जितना उपकार मानें उतना कम है। वह बड़े-में-बड़ी चीज है दुःख, विघ्न और बाधा। इनका बड़ा उपकार है। हम इन विघ्न-बाधाओं का ऋण नहीं चुका सकते। भगवान की और दुःख की बड़ी कृपा है। माँ-बाप की कृपा है तो माँ-बाप का हम श्राद्ध करते हैं, तर्पण करते हैं लेकिन इस बेचारे दुःख देवता का तो हम श्राद्ध भी नहीं करते, तर्पण भी नहीं करते क्योंकि यह बेचारा आता है, मर जाता है, रहता नहीं है। माँ-बाप का तो आत्मा मरने के बाद भी रहता है। यह बेचारा मरता है तो फिर रहता ही नहीं। इसका तो श्राद्ध भी नहीं करते।

ये दुःख आ-आकर मिटते हैं बेचारे! हमें सीख दे जाते हैं, संयम दे जाते हैं। दुःख, विघ्न, बाधाएँ हमारा इतना भला करते हैं, जितना माँ-बाप भी नहीं कर सकते। जो लोग दुःखों से डरते हैं, वे जीना नहीं जानते।

दुःख डराने के लिए नहीं आते हैं, आपके विकास के लिए आते हैं और सुख विकारी बनाने के लिए नहीं आते, आपको उदार बनाने के लिए आते हैं।

ऐसा कोई महापुरुष या प्रसिद्ध व्यक्ति दिखा दो, जिसके जीवन में दुःख या विघ्न-बाधा न आये हों और महान बन गया हो। इनका तो बहुत उपकार मानना चाहिए लेकिन हम क्या करते हैं, विघ्न-बाधाओं को ही कोसते हैं। जो हमारे हितैषी हैं उनको कोसते हैं इसलिए हम कोसे जाते हैं। क्रांतिकारी वचन हैं, बात माननी पड़ेगी।

दुःख का उपकार मानना चाहिए क्योंकि यह नयी सूझबूझ देता है। मौत आयी तो नया चोला देगी। हम क्या करते हैं, दुःख से भी डरते हैं, मौत से भी डरते हैं तो दुःख और मौत बरकरार रहते हैं। अगर हम इनका उपयोग करें तो दुःख और मौत सदा के लिए भाग जायेंगे। मेरे पास कई दुःख भेजे जाते हैं, कई आते हैं लेकिन टिकते ही नहीं बेचारे। जो दुःख और मौत से प्रभावित होते हैं उनके पास ये बार-बार आते हैं। सुख का सदुपयोग करें तो सुख भाग जायेगा और परमानंद प्रकट हो जायेगा। जिसके ऊपर लाख-लाख सुख न्योछावर कर दें ऐसा आत्मा-परमात्मा का आनंद प्रकट होगा। जो सुख का लालच करता है वह दुःख को बुलाता है और जो दुःख से डरता है वह दुःख को स्थायी करता है। दुःख से डरो नहीं, सुख का लालच न करो। सुख और दुःख के भोक्ता न बनो, सुख और दुःख का उपयोग करनेवाले हो जाओ तो आपको परमात्मप्राप्ति सुलभ हो जायेगी।

सुख भी एक पायदान है, दुःख भी पायदान है, वे तो पसार होते हैं। हवाई अड्डे पर जो सीढ़ियाँ होती हैं वे अपने-आप चलती हैं, उन पर आप भी चलो और सीढ़ियाँ भी चलें तो आपको जल्दी पहुँचा देती हैं। ऐसे ही ये सुख-दुःख आकर आपको यात्रा कराते हैं। श्रीकृष्ण कहते हैं :

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥

'हे अर्जुन ! जो योगी अपनी भाँति सम्पूर्ण भूतों में सम देखता है और सुख अथवा दुःख को भी सबमें सम देखता है, वह योगी परम श्रेष्ठ माना गया है।' (गीता : ६.३२)

सुखद अवस्था आये तो चिपकें नहीं। आयी है तो चली जायेगी। दुःखद अवस्था आयी है, उसे सच्चा न मानें, सावधानीपूर्वक उसका फायदा लें।

सुख बाँटने की चीज है। मान और सुख को भोगने की चीज बना देती है बेवकूफी। मान का भोगी बनेगा तो अपमान उसे दुःख देगा। सुख का भोगी बनेगा तो दुःख बिना बुलाये आयेगा। सुख को भोगो मत, उपयोग करो। भोजन को भोगो मत, स्वास्थ्य के लिए उपयोग करो। पति-पत्नी को भोगो मत, दिव्य संतानप्राप्ति के लिए गृहस्थ-जीवन का उपयोग करो। जो एक-दूसरे के शरीर को भोगते हैं वे मित्र के रूप में एक-दूसरे के गहरे शत्रु हैं।

हमको तो दुःख का आदर करना चाहिए। दुःख का उपकार मानना चाहिए। बचपन में जब माँ-बाप जबरदस्ती विद्यालय ले जाते हैं, तब बालक दुःखी होता है लेकिन वह दुःख नहीं सहे तो बाद में वह विद्वान भी नहीं हो सकता। ऐसा कोई मनुष्य धरती पर नहीं जिसका दुःख के बिना विकास हुआ हो। दुःख का तो खूब-खूब धन्यवाद करना चाहिए और यह दुःख दिखता दुःख है लेकिन अंदर से सावधानी, सुख और विवेक से भरा है।

मन की कल्पना है परेशानी

भगवान ने कितने अनुदान दिये, आ हा !... जरा सोचते हैं तो मन विश्रांति में चला जाता है। जरा-सा कुछ होता है तो लोग बोलते हैं, 'मैं तो दुःखी हूँ, मैं तो परेशान हूँ।' वह मूर्ख है, निगुरा है, अभागा है। गुरु को मानते हुए भी गुरु का अपमान कर रहा है। तेरा गुरु है और तू बोलता है, 'मैं दुःखी हूँ, मैं परेशान हूँ' तो तू गुरु का अपमान करता है, मानवता का अपमान करता है। जो भी बोलता है, 'मैं परेशान हूँ, मैं तो बहुत दुःखी हूँ' समझ लेना उसके भाग्य का वह शत्रु है। यह अभागे लोग सोचते हैं, समझदार लोग ऐसा कभी नहीं सोचते हैं। जो ऐसा सोचता है उसका मन परेशानी बनाता रहेगा और परेशानी में गहरा उतरता जायेगा। जैसे हाथी दलदल में फँसता है और ज्यों ही निकलना चाहता है त्यों और गहरा उतरता जाता है। ऐसे ही दुःख या परेशानी आयी और 'मैं दुःखी हूँ, परेशान हूँ' ऐसा सोचा तो समझो दुःख और परेशानी की दलदल में गहरा जा रहा है। वह अभागा है जो अपने भाग्य को कोसता है। 'मैं दुःखी नहीं, मैं परेशान नहीं हूँ। दुःखी है तो मन है, परेशानी है तो मन को है। वास्तव में मन की कल्पना है परेशानी।' - ऐसा सोचो, यह तो विकास का मूल है, वाह प्रभु ! वाह !! वाह मेरे दाता !

******

(पृष्ठ १५ 'यही आत्मसाक्षात्कार है' का शेष) फिर भी निश्चिंत हैं। आत्मज्ञान बहुत बड़ा वैभव है। 'मैं 'मैं' (आत्मा-परमात्मा) हूँ' - यह समझ हो जाय, इसीका नाम आत्मसाक्षात्कार है। ऐसा नहीं कि भड़ाका-धड़ाका होगा, नहीं। कोई आयेगा कि 'लो साक्षात्कार हो', ऐसा नहीं है। समता आ गयी, परिच्छिन्नता मिटती गयी, देहाध्यास मिट गया -

देहाभिमाने गलिते विज्ञाते परमात्मनि ।

देह-अध्यास गल जाय और परमात्म-तत्त्व को जान ले। जैसे तरंग अपने को पानी जान ले, ऐसे ही जीव अपने को ब्रह्म जान ले। हमारे गुरुजी ने तो १९ साल में साक्षात्कार कर लिया, हमने तो साढ़े २२ साल के बाद किया। हमारे गुरुजी हमारे से ज्यादा बहादुर थे, अब तुम भी बहादुर बन जाओ !

विभिन्न सम्प्रदायों व अखाड़ों के संतों-धर्माचार्यों तथा संगठन प्रमुखों ने किया पूज्य बापूजी की निर्दोषता का समर्थन व रिहाई की माँग

''कोई महिला आती है और वह कुछ कहती है तो आप उस पर विश्वास करोगे या फिर उस पुरुष पर जिसने अपना पूरा जीवन विश्व-कल्याण के लिए लगा दिया ? जो आशारामजी बापू पर टीका-टिप्पणी, निंदा कर रहे हैं, वे संत ही नहीं हैं।''

- महामंडलेश्वर परमहंस श्री नित्यानंदजी महाराज, महानिर्वाणी अखाड़ा

''परम पूज्य आशारामजी बापू की जीवनगाथा ज्ञात होने के उपरांत कोई भी व्यक्ति उनके चरणों में नतमस्तक होगा। पूज्य आशारामजी बापू एवं उनका सम्पूर्ण साधक परिवार सामाजिक सेवाकार्य करने में अग्रणी है।''

- डॉ. जयंत आठवलेजी, संस्थापक, सनातन संस्था

''वर्तमान में भारतीय संस्कृति के सबसे बड़े ध्वजावाहक संत आशारामजी बापू हैं। झूठे मुकदमों में फँसाकर संतों को जेल भेजा जा रहा है। सबको एकजुट होकर आवाज उठानी होगी।''

- बाबा रामचैतन्य सरस्वतीजी, निरंजनी अखाड़ा, शृंगेरी मठ

''जो मीडिया दिखा रहा है वह सच नहीं है। सच तो यह है कि बापूजी ने कितने बच्चों के, युवानों के जीवन बदले ! करोड़ों की जिंदगी उन्नत हुई बापू के सत्संग से ! बापूजी महापुरुष थे, महापुरुष हैं और महापुरुष रहेंगे।''

- आचार्य श्री कौशिकजी महाराज, वृंदावन

''पूज्य बापूजी ने पिछले ५० साल में जो समाजसेवा का कार्य किया है, उसे मीडिया ने कभी नहीं दिखाया। इसके विपरीत झूठ-मूठ की कहानियाँ बना के जनता को भ्रमित किया है।''

- श्री श्री १००८ महामंडलेश्वर शांतिगिरिजी महाराज

''वर्तमान में पूज्य बापूजी जैसे संतों पर ही हमारी संस्कृति और देश टिका हुआ है। इसलिए बापूजी को फँसाने का षड्यंत्र रचा गया। बापूजी निर्दोष हैं।'' - संत कृपारामजी महाराज, जोधपुर

''वे लोग बड़े भाग्यशाली हैं, जिनको बापूजी जैसे महान सद्गुरु मिले हैं। कितनी भी आँधी आ जाय, पहाड़ टूट पड़ें, दरिया में से पानी बाहर आ जाय लेकिन बापूजी के प्रति लोगों की जो श्रद्धा है, उसको कोई कम नहीं कर सकता।''

- महंत श्री रामगिरि बापू, महानिर्वाणी अखाड़ा

''बापूजी निर्दोष हैं। हम बापूजी के साथ हैं।'' - श्री भास्करगिरिजी, देवगड़ संस्था

''साजिश करके बापूजी को फँसाया जा रहा है। ईसाई मिशनरी साजिश इसलिए कर रहे हैं क्योंकि जब तक संत नहीं मिटेंगे, तब तक वे अपना धर्मांतरण का कार्य नहीं कर पायेंगे।''

- भागवताचार्या साध्वी सरस्वतीजी

''मेडिकल रिपोर्ट में लिखा है कि 'उस लड़की के बदन पर खरोंच भी नहीं है' तो बाकी की तो बात ही नहीं बनती है। निर्दोष बापूजी को जमानत मिले।''

- श्री रमेश शिंदे, राष्ट्रीय प्रवक्ता, हिन्दू जनजागृति समिति

''पूज्य बापूजी के साथ जो हो रहा है यह अपराध है और इस अपराध को संत-समाज कभी क्षमा नहीं करेगा। अखाड़ा बापूजी के ऊपर हो रहे अत्याचार का पुरजोर विरोध करेगा। षड्दर्शन साधु समाज भी इसके विरोध में है और बापूजी को सबका पूर्णतः सहयोग है।''

- श्री राजेन्द्रशरण देवाचार्य, प्रवक्ता, निम्बार्क पीठ, मथुरा

''बापूजी को परेशान किया जा रहा है क्योंकि वे हिन्दुत्व की बात करते हैं। बापू हिन्दुत्व की बात करना बंद कर दें, देशहित को भूल जायें तो पूरे झगड़े खत्म हो जायेंगे। यह हिन्दुओं के विरुद्ध एक सोची-समझी साजिश है।''

- श्री रमेश मोदी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद

RNP. No. GAMC 1132/2015-17
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2017)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/15-17
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2017)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2015-17
WPP LIC No. U (C)-232/2015-17
MNW-57/2015-17
'D' No. MR/TECH/47.6/2015
Date of Publication: 1st Sep 2015

अनेक महिला संगठनों ने देशभर में सैकड़ों रैलियों द्वारा की निर्दोष बापूजी की रिहाई की माँग

विभिन्न संगठन-प्रमुखों, मान्यवरों एवं राजनेताओं के उद्‌गार

''७६ की उम्र में बापूजी को फँसाकर प्रताड़ित किया जा रहा है। उन्हें जमानत मिलनी चाहिए।'' – श्री अशोक सिंहलजी मुख्य संरक्षक, वि.हि.प.

''सनातन धर्म का संरक्षण करते हुए समाज के सभी वर्गों को उन्नत जीवन की शिक्षा देने में बापूजी अग्रणी हैं।'' – श्री मोहन भागवत, सरसंघचालक, रा.स्व. संघ

''आशारामजी बापू का जीवन तो बहुत सात्त्विक संत का जीवन है।'' – डॉ. प्रवीण तोगड़िया, अंतर्राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष, वि.हि.प.

''आस्था व विश्वास के केन्द्र परम पूज्य बापूजी द्वारा अध्यात्म की प्रेरणा हम सबको मिलती रहती है।'' – श्री राजनाथ सिंह, तत्कालीन भाजपा अध्यक्ष, वर्तमान केन्द्रीय गृहमंत्री

''बापू के खिलाफ राजनैतिक साजिश हो रही है। वे एक राजनैतिक पार्टी के निशाने पर हैं।'' – डॉ. रमन सिंह, मुख्यमंत्री, छ.ग.

''संत आशारामजी बापू निर्दोष हैं।'' – सुश्री उमा भारती, वर्तमान केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री

''करोड़ों लोगों को जीवन जीने का मार्ग आपके विचारों से मिलता है।'' – श्री नितिन गडकरी, तत्कालीन भाजपा अध्यक्ष, केन्द्रीय सड़क परिवहन मंत्री

''बापूजी के संदेश से राष्ट्रसुख का संवर्धन होगा, राष्ट्र की प्रगति होगी।'' – श्री लालकृष्ण आडवाणी, पूर्व केन्द्रीय गृहमंत्री व पूर्व उपप्रधानमंत्री

''बापूजी ! आप रास्ता बताते रहो और राज्य की सेवा करने की शक्ति देते रहो।'' – श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया, मुख्यमंत्री, राजस्थान

''बापूजी के खिलाफ लगाया गया आरोप एक साजिश है।'' – श्री कैलाश विजयवर्गीय, राष्ट्रीय महासचिव, भाजपा

''कोई भी व्यक्ति समाज में दुःखी न रहे इसलिए बापूजी सतत प्रयत्न करते रहते हैं।'' – श्रीमती आनंदी बहन पटेल, मुख्यमंत्री, तत्कालीन शिक्षामंत्री, गुज.

''बापूजी के दर्शनमात्र से एक अद्‌भुत शक्ति मिलती है।'' – श्री प्रकाश सिंह बादल, मुख्यमंत्री, पंजाब

''आप आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा समाज की सर्वांगीण उन्नति कर रहे हैं।'' – श्री कपिल सिब्बल, पूर्व केन्द्रीय दूरसंचार मंत्री

''देशभर में बापूजी के बाल संस्कार केन्द्र, गुरुकुल तथा महिला उत्थान के लिए आश्रम व अभियान चलते हैं।'' – श्रीमती कृष्णा तीरथ, तत्कालीन केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री

''बापूजी ! सबसे बड़ी चीज संतों की दुआ है। हम हिन्दुस्तानी मुसलमान हैं। हमारे हिन्दुस्तान में अमन-चैन रहे, ऐसी आप दुआ करें।'' – डॉ. फारुख़ अब्दुल्ला, तत्कालीन मुख्यमंत्री, जम्मू-कश्मीर

श्री अजय माकन, तत्कालीन केन्द्रीय खेल मंत्री

''धर्मांतरण कार्यों का प्रतिरोध करने में संत आशारामजी बापू सबसे आगे हैं। उन पर किया केस पूरी तरह बोगस है। 'उन्हें ऐसे प्रकरण में फँसाना ही है' ऐसा निश्चय करके साजिश रची गयी। दंडित होने के बावजूद कइयों को जमानत मिली है तो निर्दोष बापूजी को क्यों नहीं ?'' – डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी

Posting at Dehradun GPO. between 1st to 17th of every month. ❖ Posting at ND PSO on 10th & 11th of E.M. ❖ Posting at MBI Patrika Channel on 24th & 25th of E.M.